



सत्यमेव जयते

दीप ज्योति



अंक - 11 वर्ष 2024-25

राजभाषा हीरक जयंती विशेषांक



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
गणेशपेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)



गीत नया गाता हूं



टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात
कोयल की कुहुक रात
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूं
गीत नया गाता हूं।

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी
अंतर को चीर
व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा
काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं
गीत नया गाता हूं।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी



सत्यमेव जयते

दीप ज्योति



अंक - 11 वर्ष 2024-25

राजभाषा हीरक जयंती विशेषांक



संपादक
संतोष कुमार
सहायक निदेशक



संरक्षक
विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)



कार्यकारी संपादक
बृजेश कुमार सुमन
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, गणेशपेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
दूरभाष - 0712-2726219 ईमेल - dir-nagpur@esic.nic.in

केवल विभागीय परिचालन हेतु

अस्वीकरण : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं उसकी मौलिकता का दायित्व संबंधित लेखक का है। इससे उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। चित्र इंटरनेट से साभार लिए गए हैं।

इस अंक में...

क्र.सं.	विषय सूची/रचना का शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	महानिदेशक	3
2	संदेश	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	4
3	संरक्षक की कलम से...	संयुक्त निदेशक (प्रभारी)	5
4	संपादकीय...	संतोष कुमार	6
5	अपनी - अपनी दुनिया : अपनी - अपनी सच्चाई	विशद वि. वाकपांजर	7-8
6	अंदर वाले और बाहर वाले	विशद वि. वाकपांजर	9-10
7	सपनों की उड़ान	हर्षित चंदेल	11
8	हिंदी दीप जलाने आया हूँ	रमेश सहारीयार	12
9	यकीन नहीं होता कि रिटायर हो गया हूँ	रमेश सहारीयार	13
10	दुनिया को जोड़ने और समाज को एक आकार देने में सोशल मीडिया का प्रभाव	मनोज कुमार यादव	14-15
11	हिंदी की विकास यात्रा में मराठी भाषा रचनाकारों एवं संस्थाओं का योगदान	बृजेश कुमार सुमन	16-19
12	प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर	राजभाषा शाखा	20-21
13	भारत के दिल में बसा नागपुर शहर	निकिता भारके	22-23
14	नागपुर के पर्यटन स्थल	प्रशांत इंगले	24-29
15	भारत की टाइगर कैपिटल : नागपुर और इनके प्रसिद्ध टाइगर रिज़र्व	तेजा वेंकट रमना	30-32
16	लोकतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	आशुतोष कुमार	33-35
17	डर से जागृति तक : एक नई सुबह	अमोलिना बैनर्जी	36-37
18	कुछ रोचक तथ्य	सुशील थुल	38
19	बोधप्रद तथापि वास्तविक	वैशाली गजभिये	38
20	पेल ब्लू डॉट - पृथ्वी की सेल्फी	तानिया भोंसुले	39-43
21	क.रा.बी. निगम में सेवा से जुड़ी मेरी यादें	अनुमति सिन्नरकर	44-45
22	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता :	जम्बेश्वरी वैष्णव	46
23	प्रसन्नता का कोई मार्ग नहीं है प्रसन्नता ही मार्ग है	आशुतोष कुमार	47-48
24	रोज वेगळे प्रश्न / रोज अलग-अलग सवाल (अनुवाद)	निकिता क्षिरसागर	49
25	सुंदर नात्यावर / सुंदर रिश्ते (अनुवाद)	तानिया भोंसुले	50
26	आयुष्य इतकं धावपळीचं / जीवन इतना दौड़ धुप (अनुवाद)	तानिया भोंसुले	50
27	नेहमीच नसतं अचूक कुणी / हमेशा सही नहीं होता कोई (अनुवाद)	निकिता क्षिरसागर	51
28	राजभाषा गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ	राजभाषा शाखा	52-55
29	अन्य गतिविधियाँ		56-60
30	चित्र यात्रा		61-63
31	आपकी प्रतिक्रियाएं		64



क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi - 110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

अशोक कुमार सिंह (भा.प्र.से.)
महानिदेशक




अ.शा. पत्र सं. : ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 12 मार्च 2025

संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'दीपज्योति' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का सतत प्रकाशन कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं भाषायी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाता है।

पत्रिका प्रकाशन की शुभकामनाएं।


(अशोक कुमार सिंह)

श्री विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर, क.रा.बी. निगम,
पंचदीप भवन, गणेशपेट, नागपुर - 440018



क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)



सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi - 110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)



अ.शा. पत्र सं. : ए-49/17/3/2016-रा.भा.
दिनांक : 18 मार्च 2025

संदेश

यह सराहनीय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'दीपज्योति' ने एक दशक की सफल यात्रा पूर्ण की है और 11वें अंक को राजभाषा हीरक जयंती विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। हिंदी के समग्र इतिहास में नागपुर जिले की भूमिका अद्वितीय है। विश्व हिंदी सम्मेलन की परंपरा का श्रीगणेश हो या कई हिंदी साहित्यकारों की कर्मभूमि, नागपुर हमेशा से ही महत्वपूर्ण रहा है।

मध्य भारत में सामाजिक सुरक्षा के हितलाभों का वितरण करते हुए राजभाषा के माध्यम से कामकाज करने में उप क्षेत्रीय कार्यालय अग्रणीय रहा है।

'दीपज्योति' के नवीनतम अंक के प्रकाशनार्थ शुभकामनाएं।

रत्नेश कुमार गौतम

(रत्नेश कुमार गौतम)

श्री विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर, क.रा.बी. निगम,
पंचदीप भवन, गणेशपेठ, नागपुर - 440018



संरक्षक की कलम से

नीतियों की सफलताओं को मापने के बहुत से पैमाने होते हैं किन्तु सफलताओं से प्रोद्भूत हर्ष एवं उल्लास भावनात्मक रूप से ही अनुभूत किए जा सकते हैं। नागपुर क्षेत्र में राजभाषा की नीतियों का कार्यान्वयन सफलता पूर्वक होता रहा है। विगत अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान इस क्षेत्र की पत्रिका को 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं पत्रिका की रचना से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

साथ ही वर्ष 2023-24 के दौरान इस कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए जाने पर भी मैं क्षेत्र के सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

आज का युग तकनीकी का युग है। तकनीकी से मनुष्य जुड़ा है और मनुष्य से मनुष्य। अपनी भाषा में व्यवहार करने से तकनीकी के पूरे लाभ और परिणाम मिलते हैं। हिंदी एक ऐसी लचीली भाषा है, जो बोलचाल के शब्दों को, आमजनों द्वारा प्रयुक्त किए जा रहे शब्दों को, वैसे ही समाहित करती है जैसे वे उसी भाषा के शब्द हैं। हिंदी इस दृष्टि से भारत की एक समृद्ध एवं एक

बड़े आवाम द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।

निगम में भी हमारे हितग्राहियों को बेहतर एवं सुविधाजनक हितलाभ प्रदान करने के लिए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। इस क्षेत्र के सभी कर्मचारी अपने सभी सरकारी कामकाज अधिकांशतः हिंदी में ही करते हैं एवं राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।

इसी श्रृंखला में इस क्षेत्र की हिंदी पत्रिका "दीप ज्योति" का 11वाँ अंक एक बार फिर नए कलेवर में आपके अवलोकन एवं रसास्वादन के लिए प्रस्तुत है। पत्रिका के प्रकाशन में हमारा निरंतर प्रयास है कि इसके माध्यम से कार्मिकों की रचनात्मकता में अभिवृद्धि हो। साथ ही इसे रुचिपूर्ण बनाते हुए राजभाषा हिंदी की जानकारीयों व इस क्षेत्र में विभाग की गतिविधियों को इसमें सुसज्जित करें। पत्रिका के परिमार्जन एवं प्रोत्साहन हेतु आपके सुझाव व प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

संपादकीय



नागपुर क्षेत्र के कार्मिकों की रचनाधर्मिता की प्रतिकृति के रूप में विभागीय हिंदी पत्रिका “दीप ज्योति” का 11वाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

वर्ष 2022-23 के दौरान प्रकाशित इस क्षेत्र की पत्रिका को “ख” क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं निर्णायक मंडल का आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही क्षेत्र के सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ, जिन्होंने पत्रिका को यह उपलब्धि दिलाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

जैसा कि हम सभी जान रहे हैं कि इस वर्ष राजभाषा के रूप में हिंदी ने 75 वर्ष पूरे किए हैं और राजभाषा विभाग द्वारा इसे “राजभाषा हीरक जयंती” के रूप में मनाया जा रहा है। स्वभाषा की संकल्पना से निहित यह हमारी संस्कृति और अस्मिता से जुड़ी भाषा है। इस विशाल भाषा सागर की रचना में कई क्षेत्रीय भाषाओं ने भी अमूल्य योगदान दिया है। कई हिंदी सेवियों सहित हिंदीतर भाषा भाषी रचनाकारों एवं

प्रहरियों ने इस वृक्ष को सींचा है जिसके परिणामस्वरूप आज हिंदी तकनीकी सुविधा से लैस होकर विश्व पटल पर अपना परचम फहरा रही है। हिंदी के राजभाषा के रूप में 75वीं वर्षगांठ पूरे करने के अवसर पर इसके इतिहास को याद करते हुए हमने इस अंक में इसकी सहोदर भाषा मराठी से जुड़े कुछ रचनाकारों के योगदान को भी रेखांकित किया है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सहकर्मियों की रचनाएं उनकी अंतर्निहित रचनात्मकता को उद्घाटित करती हैं, वहीं इसमें समाहित क्षेत्र की कुछ विशेष गतिविधियों का सिंहावलोकन स्मृतियों को तरोताजा कर देता है एवं विकास का एक नया लक्ष्य गढ़ने की दिशा प्रदान करता है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और आप सभी सुधी पाठकों से भविष्य में इसे और बेहतर बनाने हेतु सुझाव एवं प्रतिक्रिया आमंत्रित करता हूँ।

संतोष कुमार
सहायक निदेशक

अपनी - अपनी दुनियाँ : अपनी - अपनी सच्चाई

जीवन एक क्रमिक विकास की यात्रा है, जिसमें हर व्यक्ति अपने अनुभवों से सीखता है और समय के साथ बदलता है। यही प्रक्रिया पेशेवर जीवन में भी दिखाई देती है।

युवा अवस्था में अक्सर व्यक्ति को विश्वास होता है कि वह दुनिया को बदल सकता है। उस समय सोच बेपरवाह, आदर्शवादी और निडर होती है। स्कूल, कॉलेज या दफ्तर केवल संस्थान नहीं लगते, बल्कि विचारों का रणक्षेत्र प्रतीत होते हैं। मुद्दे सिर्फ़ दिनचर्या तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सामाजिक संरचनाओं और नीतियों तक फैल जाते हैं। हर चुनौती एक लड़ाई जैसी लगती है और हर जीत इतिहास में छाप छोड़ने का अवसर बन जाती है।

ऐसे दौर में लगता है कि बड़े पदों पर बैठे लोग समझ नहीं पाते या बदलाव से डरते हैं। शायद यह इसलिए होता है क्योंकि जब खोने के लिए कुछ नहीं होता, तब पाने की संभावनाएँ ही सब कुछ होती हैं।



विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

ज़िम्मेदारी और बदलाव की शुरुआत

जैसे-जैसे उम्र और अनुभव बढ़ते हैं, और निर्णयों से दूसरों का जीवन प्रभावित होने लगता है तब आदर्शवाद की जगह संतुलन आ जाता है। जो कभी जोखिम लेने को तैयार रहता है, वही आगे चलकर जोखिम से बचने वाला बन जाता है। यही बदलाव निजी, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में भी दिखाई देता है।

जो व्यक्ति कभी नियमों का विरोध करता था, वही आगे चलकर उन्हें लागू करने की ज़िम्मेदारी उठाता है। जो कभी अपने वरिष्ठों को कठोर निर्णयों के लिए दोषी ठहराता था, वही जब नेतृत्व की कुर्सी पर बैठता है, तो समझता है कि निर्णय लेना कितना कठिन और जटिल होता है। तब यह भी स्पष्ट हो जाता है कि संसाधन सीमित होते हैं और हर किसी को संतुष्ट करना संभव नहीं।

कॉलेज का छात्र जो अधिकारियों के खिलाफ़ खड़ा होता है, वही आगे चलकर अधिकारी बनकर नियम लागू करता है। कार्यकर्ता जो बदलाव के लिए लड़ता है, वही नेता बनकर धैर्य की बात करता है।

संतुलन का कठिन सबक

समाज का चक्र भी यही कहानी दोहराता है। युवा जोश में क्रांति चाहते हैं, लेकिन उम्र और अनुभव सिखाते हैं कि बदलाव अचानक नहीं आता, बल्कि धीरे-धीरे विकसित होता है। हर पीढ़ी को लगता है कि उसके पूर्वज गलत थे, लेकिन जब वही पीढ़ी उनकी जगह पहुँचती है, तो उम्र और अनुभव के अनुरूप उसी तरह के फैसले लेने लगता है।

ऊपर से देखने का मतलब केवल दूर तक देखना नहीं है, बल्कि अलग दृष्टिकोण से देखना भी है। जैसे-जैसे व्यक्ति बड़ा होता है, उसे एहसास होता है कि जिन बातों को कभी वह बहुत बड़ा समझता था, वे वास्तव में एक लंबी यात्रा के छोटे कदम थे। जब कोई व्यक्ति अपने व्यावसायिक जीवन के सबसे प्रारंभिक एवं निचले स्तर पर होता है, तो उसे लगता है कि उसके मुद्दे ही सबसे महत्वपूर्ण हैं और ऊपर बैठे लोग न समझते हुए जानबूझकर अन्याय कर रहे हैं। लेकिन जैसे जैसे वह ऊपर पहुँचता है तब समझ में आता है कि तस्वीर और भी बड़ी है। बड़ी तस्वीर में वे मुद्दे उतने महत्वपूर्ण नहीं दिखते, क्योंकि ध्यान देने योग्य और भी अहम मुद्दे हैं। जीवन के विस्तृत कैमवास पर वे विषय कहीं न कहीं धुँधले पड़ जाते हैं, समय और समाज की कसौटी पर और भी बड़े सरोकार खड़े होते हैं।

आखिरकार, जीवन की यात्रा केवल आदर्शों और विद्रोह से आगे बढ़ने की कहानी नहीं है, बल्कि ज़िम्मेदारी और संतुलन सीखने की प्रक्रिया भी है। हर पीढ़ी अपने आदर्शों को लेकर संघर्ष करती है, लेकिन समय और अनुभव सिखाते हैं कि वास्तविक परिवर्तन धीरे-धीरे होता है और उसमें समझौते तथा धैर्य दोनों की आवश्यकता होती है। व्यक्ति जब नीचे से ऊपर तक की यात्रा पूरी करता है, तो उसे समझ आता है कि बड़ी तस्वीर कहीं अधिक जटिल और विस्तृत है। यही जीवन का सबसे बड़ा सबक है—दृष्टिकोण बदलते हैं, पर सत्य यही है कि हर इंसान अपनी-अपनी दुनिया और अपनी-अपनी सच्चाई में जीता है।

महाराष्ट्र क्षेत्र में स्थित क्षेत्रीय कार्यालय / उप क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्षेत्र



अंदर वाले और बाहर वाले

एक कहानी अक्सर सुनते आए थे 'अंदर वाले और बाहर वाले' जो कि स्कूल की किताबों में मराठी के पाठ्यक्रम में एक पाठ हुआ करता था। यह एक मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री पी. एल. देशपांडे जी के द्वारा लिखित रचना पर आधारित है जिसमें कई सालों बाद नागपुर में ट्रांसफर और पोस्टिंग के परिप्रेक्ष्य में इसी का स्वरूप दिखाई दिया तो ज़िक्र उठा, और वो कहानी याद आ गयी, जो कुछ इस प्रकार है -



विशद वि. वाकपांजर
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

“जब हम रेलवे प्लेटफॉर्म पर खड़े होते हैं और ट्रेन आती है, तो चाहे कितनी भी भीड़ हो, हमें उसमें जगह दिखती है, और हम अंदर घुसने की कोशिश करते हैं। उसी समय, अंदर के लोग कहते हैं, "बहुत भीड़ है, जगह नहीं है..." और दरवाजा बंद करने की कोशिश करते हैं। हम किसी तरह अंदर घुसते हैं, ट्रेन चलने लगती है, और हमें बैठने की जगह मिल जाती है। अगले स्टेशन पर फिर वही दृश्य होता है - बाहर खड़े लोगों को जगह दिखती है और अंदर के लोग वही दोहराते हैं, "बहुत भीड़ है, जगह नहीं है..." अब फर्क बस इतना होता है कि इस बार हम भी अंदर वालों में होते हैं!”

वही रेलवे के कर्मचारी, जिन्होंने एक समय पर अंदर आने के लिए जगह बनवाई और मदद की थी, लेकिन अंदर आने के बाद जब वही कर्मचारी दूसरों को अंदर लाने अथवा लाने का प्रयास करते हैं, तो वे बुरे लगने लगते हैं और उनका विरोध किया जाता है।



लोग जब तक बाहर होते हैं, तब तक वे अंदर आने के लिए संघर्ष करते हैं, लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति अंदर आ जाता है, उसकी मानसिकता तुरंत बदल जाती है। एक बार अंदर आने के बाद, वे दूसरों को बाहर रखने का प्रयास करते हैं और उसी में आनंद लेते हैं। पहले जो यात्री बाहर खड़ा संघर्ष कर रहा था, वही अंदर आने के बाद नए बाहर वालों को

रोकने की कोशिश करता है।

रेलवे की यह हलचल सिर्फ एक भौतिक संघर्ष नहीं है, बल्कि सामाजिक जीवन का एक प्रतीक है, जहां हर कोई अपनी

जगह बचाने में लगा है। ऐसे ही निजी एवं आधिकारिक जीवन में भी होता है। मानवीय मानसिकता कुछ इसी तरह से कार्य करती है। दरअसल, व्यक्ति अपने हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करता है। जो व्यक्ति या परिस्थिति उसके तत्कालीन हितों के आड़े आती है, वह उसे अपना विरोधी मानता है। हालाँकि यह एक प्राकृतिक प्रवृत्ति है परन्तु यही स्वार्थी प्रवृत्ति संघर्षों को जन्म देती है। जिस चीज़ की वजह से कभी उसे स्वयं फायदा हुआ था उसी चीज़ से जब बाद में कुछ नुकसान होता दिखता है तो एक पल में वह भूल जाता है कि इसी ने कभी उसकी सहायता भी की थी या आज वह जहाँ खड़ा है वह सिर्फ उसी वजह से खड़ा है जिसे आज वह गलत कह रहा है।

जिंदगी में अक्सर हम बदल जाते हैं, लोग बदल जाते हैं, कुछ विचार बदल जाते हैं और साथ ही कुछ सही और गलत के मापदंड/ पैमाने बदल जाते हैं। जो पहले सही लगता था वो बाद में गलत प्रतीत होता है और जो पहले गलत था वो अब सही लगने लगता है।

फिर आखिर सही क्या है और क्या गलत...? वास्तविकता में दुनिया में सबके अपने-अपने पैमाने होते हैं और अपनी-अपनी सच्चाइयाँ। हकीकत में, दुनिया का हर व्यक्ति दुनिया को उस नज़र से देखता है, जहाँ पर वो स्वयं खड़ा होता है।

कार्यालय जीवन में भी लोग इसी तरह व्यवहार करते हैं। जब तक उनकी खुद की ज़रूरत होती है, तब तक वे उसी चीज़/नीति का भरपूर समर्थन करते हैं और उसे लागू करने पर ज़ोर देते हैं, क्योंकि तब वह चीज़/नीति उनके हित में होती है। परन्तु जैसे ही उन्हें वह मिल जाता है, जो वे चाहते हैं, और अब उसी नीति के अनुरूप किसी और की बारी होती है, तो वे उसी नीति को दूसरों पर लागू करने का जोरदार विरोध करते हैं।

अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए वे किसी न किसी विचारधारा की चादर ओढ़ लेते हैं, और फिर शुरू होता है – अपने स्वार्थ से जुड़े विचारों और विचारकों का प्रभाव बढ़ाने का सफर, साथ ही अपने विरोधियों का विरोध करने का सफर। बाहरी दिखावा जो भी हो, अंदर से इसका केवल स्वार्थी उद्देश्य होता है - स्वयं का ही भला होना और दूसरों का विचार न करना।

सामान्य लोगों को पता भी नहीं होता कि वे क्या कर रहे हैं और किस चीज़/नीति का विरोध कर रहे हैं। लेकिन जहाँ वे खड़े होते हैं, वहाँ से उन्हें लगता है कि वे 100% सही हैं। इसके बाद पूरा प्रयास और सोच-विचार एक ही दिशा में बंध जाता है। असली गड़बड़ यहीं से शुरू होती है – यह पढ़ना और सोचना किसी नई दिशा को तय नहीं करता, बल्कि पहले से तय दिशा के हिसाब से ही पढ़ना और सोचना होता है। और अंततः वही नीति, जो एक अच्छे उद्देश्य के साथ लाई गई थी, एक बार लागू होने के बाद उन्हीं लोगों द्वारा गलत करार दी जाती है, जिनकी भलाई के लिए वह लाई गई थी।

ऐसे में कोई तो हो, जो सबके बारे में सोचे। जिम्मेदारियों और अधिकारों के बोझ तले दबे बेचारे रेलवे कर्मचारी निष्पक्षता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। यात्री अपने बारे में सोच सकते हैं, परन्तु यह छूट रेलवे कर्मचारियों के पास नहीं होती। उन्हें सभी की खुशियों के विपरीत ही सही, अपने कर्तव्यों का पालन करना होता है।

अगली बार यदि कुछ गलत लगे, तो सोचिए—अगर आप स्वयं बाहर होते, तो?

सपनों की उड़ान

बादलों को नीचे छोड़,
आसमान के ऊपर जाना था।
ज़मीन को पीछे छोड़,
समुद्रों के पार जाना था।

पर उड़ने के पहले ही मैं गिरने से डरा था,
गिरने के नाम पे मैं उड़ने से ही डरा था।
भूल गया कि मैं उड़ने के लिए ही तो बना था,
उड़ने से पहले ही मैं उड़ने से डरा था।

खड़े-खड़े मुझसे धूल, हवा, पानी और जुनून सब बह गया,
खड़े-खड़े मैं बस जंग, जाम और अफ़सोस में डूबा एक लोहे का ढेर रह गया।
आसमान में कभी नहीं गया पर ज़मीन पे ही सब सह गया,
जिया तो कभी नहीं पर थोड़ा ज़्यादा ज़िंदा रह गया।

कोशिश की थी मैंने पर कभी उड़ न पाया,
इतने सालों से ये भ्रम समझ न आया।
कि मन में तो आसमान को छूना था,
पर पैरों को कभी ज़मीन से उठा न पाया।

आज सोचता हूँ इतने सालों से जो किया वो गलत था या सही,
बस इतना पता है कि मैं वो हवाईजहाज हूँ जो कभी उड़ा ही नहीं।

हर्षित चंदेल
पुत्र - श्री नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक

हिंदी दीप जलाने आया हूँ

हिमायती हूँ हिंदी का, अवरोध हटाने आया हूँ.....

मन मस्तिष्क के अंदर से, विरोध हटाने आया हूँ.....

बचपन में हुए थे, मेरे अंदर जो बीज आरोपित.....

उसी घने वृक्ष से, मीठे फल सभी को चखाने आया हूँ.....

प्रहरी मैं मातृभाषा का, शीश नवाने आया हूँ.....

संस्कार जो भाषा ने भरे, कृतज्ञता जताने आया हूँ.....

पर भाषा की नीम नींद में, बच्चे सोए हैं, जो अपने.....

हौले हौले कानों में उनके, मिश्री घोलने आया हूँ.....

हटा लबादा परभाषा का, अपनी याद दिलाने आया हूँ.....

अंदर प्रज्वलित हिंदी दीप को रौशनदान, दिखाने आया हूँ.....

जो जन्मे थे हिंदी में, दी डेगा डेगी हिंदी में, थोड़े शिथिल दिख रहे...

वाणी से अपने जान फूंक, हिंदी की तान पे, उन्हें नचाने आया हूँ....

रोम रोम हिंदी का ऋणी है, खुद पे ऋण का, बोझ बढ़ाने आया हूँ....

अपने छोटे से पिटारे से, बच्चों के लिए, नन्ही सी कविता लाया हूँ...

तोतली भाषा में, जब इसको, एक बार पढ़ लेंगे बच्चे.....

धन्य समझूंगा खुद को मैं, पहली बार इसे सुनाने आया हूँ.....

सहरीयार है नाम मेरा, इसी शहर में, वर्षों से रहता आया हूँ.....

सेवा है धर्म मेरा, मानवता के संग, हिंदी की भी सेवा करता आया हूँ

बेमिसाल कुछ प्रहरी मिले हैं, सीखने की जिनसे, चाह जगी है.

उनके कदमों का कर अनुकरण, खुद को सुदृढ़ करने आया हूँ....

हाथों में ले के मशाल, हिंदी का अलख जगाया हूँ.....

अंग्रेजी के मोह में फंसे बच्चों को हिंदी की, महत्ता समझाया हूँ...

निज भाषा का, ज्यादा प्रयोग ही भाषा का सम्मान है.....

इस प्रयोजन निज भाषा, लिखना पढ़ना, सिखाने आया हूँ.....

रमेश 'सहरीयार'

द्वारा - नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक

यकीन नहीं होता कि, रिटायर हो गया हूं

दोस्तों रिटायर हो के, खुला परिंदा हो गया हूं.....

सांसें तो पहले भी लेता था, पर अब जिंदा हो गया हूं.....

यूं तो बंधन नहीं था, पर कमर पे, बेल्ट तो थी प्यारे.....

प्यार से बेल्ट खोल, थोड़ा हल्का हो गया हूं.....

ये न पूछ कि, कहां लगाना है या कहां लग गया हूं.....

जिम्मेवारी के बोध से, अभी अभी ही तो, मुक्त हो पाया हूं.....

छोड़ दे कुछ दिनों के लिए मुझे, बस यूं ही मेरे यारों.....

मुझे खुद को, यकीन दिलाना है कि, मैं रिटायर हो गया हूं.....

कितना अच्छा था आप सभी का साथ, मिस करने लग गया हूं..

वो दफ्तर जाना, सब से मिलना मिलाना, याद करने लग गया हूं..

वो लंच साथ साथ करना, इसके बाद का वो हंसी ठहाका.....

सब, यादों के दरीचे में, करीने से सजे हैं, साफ करने लग गया हूं..

तीस साल, तीस मिनटों जैसे, उंगलियों पे, गिनने लग गया हूं...

भर्ती कल की बात हो जैसे, सुबह परेड सा, करने लग गया हूं.....

वो डड्डू चाल, वो फटीक, वो मेस की दाल, यादों में बसी है...

सारे उस्तादों का नाम, याद करने लग गया हूं.....

पुरानी यादों में डूब के, सुबह से शाम करने लग गया हूं.....

दफ्तर की आदत गई नहीं, और जल्दी जागने लग गया हूं.....

रिपोर्ट का लेना देना, वो ड्राफ्ट और वो करेक्शन.....

फजीहत लगती थी, उसी को मिस, करने लग गया हूं

ये कहना अतिशयोक्ति होगी, कि रिटायर हो, खुश हो गया हूं.....

लगता है सब कुछ लुट गया, और एकदम खाली हो गया हूं.....

औरों को बुरा न लगे तो, कहे देता हूं दोस्तों.....

थियेटर से फिल्म उतर गई, और मैं बस, हॉल खाली हो गया हूं.....

शिष्टाचार बस, कहना होता है, रिटायर हो, खुश हो गया हूं....

हकीकत ये है कि, घर के कोने में पड़ा झाड़ फानूस हो गया हूं.....

बड़ी तमन्ना थी कि, हम भी धूम से फूटते.....

सच कहूं तो, मैं वो भरा बम हूं जो फुस्स हो गया हूं.....

रमेश 'सहरीयार'

द्वारा - नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक

दुनिया को जोड़ने और समाज को एक आकार देने में सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो मौलिक रूप से लोगों के संवाद करने, बातचीत करने और सूचनाओं के उपभोग करने के तरीके को बदल रहा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंकडइन और टिकटॉक जैसे प्लेटफार्म ने वर्चुअल नेटवर्क बनाए हैं जो इस भौगोलिक अंतराल को पाटते हैं। यह लोगों को अभूतपूर्व तरीकों से एक साथ लाता है। जहाँ सोशल मीडिया कई लाभ प्रदान करता है, वहीं यह महत्वपूर्ण चुनौतियों और जटिलताओं को भी प्रस्तुत करता है, जो व्यक्ति और समाज को प्रभावित करते हैं।



मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक

संबद्धता और वैश्विक संचार

दुनिया भर के लोगों को जोड़ने की क्षमता, सोशल मीडिया के सबसे गहरे प्रभावों में से एक है। यह व्यक्तियों को अपने अनुभवों, संस्कृतियों और विचारों को साझा करने, समझ और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह नेटवर्क द्वारा रीयल-टाइम संचार को सक्षम करता है, जिससे लोगों के लिए दूरी की परवाह किए बिना मित्रों और परिवार के संपर्क में रहना आसान हो जाता है। सोशल मीडिया पेशेवर नेटवर्किंग और व्यक्तिगत ब्रांडिंग विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही यह कॅरिअर के विकास और विस्तार के अवसर प्रदान करता है।



इसके आलावा, सोशल मीडिया ने सूचना के प्रसार का लोकतंत्रीकरण किया है। पारंपरिक मीडिया आउटलेट्स की तुलना में इन प्लेटफार्मों पर समाचार तेजी से फैल सकते हैं, जिससे लोगों को वैश्विक घटनाओं के बारे में सूचित रहने में मदद मिलती है। आपात स्थिति और संकट के दौरान, सोशल मीडिया जागरूकता फैलाने और समर्थन जुटाने के लिए एक आवश्यक उपकरण के रूप में भी कार्य करता है।

सांस्कृतिक प्रभाव और सामाजिक आंदोलन

सोशल मीडिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करता है। यह उपयोगकर्ताओं को नए विचारों, जीवन शैली और रुझानों की ओर प्रेरित करता है, साथ ही विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देता है। यूट्यूब और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से, कंटेंट क्रिएटर ऐसी सामग्री साझा करते हैं जो सांस्कृतिक अनुभवों, प्रभावित करने वाली कलाओं, फैशन, संगीत और ऐसी अनेक चीजों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाती है। इस सांस्कृतिक संमिलन ने



समकालीन समाज को आकार देते हुए नए उपसंस्कृतियों के उद्भव और वैश्विक प्रभावों के समामेलन को जन्म दिया है। इसके अलावा, सोशल मीडिया सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को चलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। हैशटैग और वायरल कैम्पेन में भी लोगों का ध्यान सामाजिक न्याय के मुद्दों पर आकर्षित करने एवं जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता और नस्लीय न्याय जैसे विषयों पर रैली के

लिए एकजुट करने की इसमें शक्ति है। आयोजन और ऑनलाइन समर्थन जुटाने की सक्षमता ने समाज में ठोस परिवर्तन किए हैं और हाशिए पर पड़े समुदायों को एक मुखर आवाज दी है।

चुनौतियां और नैतिक चिंताएं

अपने सकारात्मक पहलुओं के बावजूद भी सोशल मीडिया महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश करता है। गलत सूचना और फर्जी खबरों का प्रसार एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरा है, जो जनता की राय को प्रभावित करता है और पारंपरिक मीडिया और संस्थानों में विश्वास को कम करता है। ऐसे एल्गोरिथ्म जो सनसनीखेज और ध्रुवीकरण वाले सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, मौजूदा पूर्वाग्रहों को मजबूत करते हुए एक इको चैम्बर्स बना सकते हैं और सामाजिक विभाजन की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

गोपनीयता और डेटा सुरक्षा भी प्रमुख चिंताएं हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करते हैं जो उपयोगकर्ता की सहमति और डेटा सुरक्षा के बारे में सवाल उठाते हैं। डेटा उल्लंघनों और सूचना के अनधिकृत उपयोग के उदाहरणों ने और अधिक सख्त विनियमों तथा और बेहतर गोपनीयता प्रचलन की आवश्यकता पर जोर डाला है।



इसके अलावा, सोशल मीडिया की लत की प्रकृति मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डाल सकती है। जीवन के क्यूरेटेड और आदर्शकृत चित्रणों के लगातार संपर्क में रहने से अपर्याप्तता, चिंता और अवसाद की भावना पैदा हो सकती है। एक ऑनलाइन व्यक्तित्व को बनाए रखने का दबाव भी तनाव और बर्नआउट में योगदान कर सकता है।

सोशल मीडिया का भविष्य

जैसे-जैसे सोशल मीडिया का विकास हो रहा है, इन चुनौतियों का समाधान करना सर्वोपरि हो जाता है। सामग्री मॉडरेशन और डेटा प्रबंधन में अधिक जवाबदेही और पारदर्शिता की मांग प्लेटफॉर्म नीतियों में सुधार ला रही है। उपयोगकर्ता अपनी ऑनलाइन उपस्थिति के बारे में अधिक जागरूक हो रहे हैं, नैतिक प्रचलन की मांग कर रहे हैं और डिजिटल साक्षरता के महत्व पर जोर दे रहे हैं।

सोशल मीडिया का भविष्य जिम्मेदारी और नैतिक आचरण की आवश्यकता के साथ कनेक्टिविटी और अभिव्यक्ति के लाभों को संतुलित करने में निहित है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे नवप्रवर्तन कंटेंट मॉडरेशन में सुधार और गलत सूचना से निपटने में भूमिका निभा सकते हैं।

हिंदी की विकास यात्रा में मराठी भाषी रचनाकारों एवं संस्थाओं का योगदान

हम सभी जानते हैं कि हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। लेकिन हिंदी को यह दर्जा इतना आसानी से नहीं मिल गया। इसके लिए लंबी लड़ाई चली। वर्ष 2024 के दौरान राजभाषा के रूप में हिंदी ने 75 वर्ष पूरे किए हैं। इस विकास यात्रा में अन्य भाषाओं के साथ-साथ मराठी भाषा एवं इससे जुड़े कई साहित्यिक विभूतियों एवं सेनानियों का भी योगदान रहा है। इस लेख में आप मराठी भाषा से जुड़े कुछ महान व्यक्तित्व एवं संस्थानों के प्रयासों से रूबरू होंगे जिन्होंने हिंदी के इस विशाल वृक्ष को सींचा है।

काका कालेलकर

(1 दिसंबर, 1885 - 21 अगस्त, 1981)



काका कालेलकर के नाम से विख्यात दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ। जिन नेताओं ने राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य में विशेष दिलचस्पी ली और अपना समय अधिकतर इसी काम को दिया, उनमें काकासाहब कालेलकर का नाम भी प्रमुखता से आता है। 1938 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधिवेशन में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था, "राष्ट्रभाषा प्रचार हमारा

राष्ट्रीय कार्यक्रम है"।

उन्होंने पहले स्वयं हिंदी सीखी और फिर कई वर्षों तक दक्षिण में सम्मेलन की ओर से प्रचार-कार्य करते रहे। हिंदी-प्रचार के कार्य में जहाँ कहीं कोई दोष दिखाई देते अथवा



बृजेश कुमार सुमन
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

किन्हीं कारणों से उसकी प्रगति रुक जाती, गांधी जी काका कालेलकर को जाँच के लिए वहाँ भेजते। इसीलिए 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना के बाद गुजरात में हिंदी-प्रचार की व्यवस्था के लिए गांधी जी ने काका कालेलकर को चुना। काका साहब की मातृभाषा मराठी थी। नया काम सौंपे जाने पर उन्होंने गुजराती का अध्ययन प्रारंभ किया। साहित्य अकादमी में काका साहब गुजराती भाषा के प्रतिनिधि रहे। गुजरात में हिंदी-प्रचार को जो सफलता मिली, उसका मुख्य श्रेय काका साहब को है। उनके द्वारा रचित जीवन-व्यवस्था नामक निबन्ध-संग्रह के लिये उन्हें सन् 1965 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आचार्य विनोबा भावे

(11 सितंबर 1895 - 15 नवंबर 1982)

बीसियों भाषाओं के ज्ञाता विनोबा जी देवनागरी को विश्व लिपि के रूप में देखना चाहते थे। भारत के लिये



वे देवनागरी को सम्पर्क लिपि के रूप में विकसित करने के पक्षधर थे। वे कहते थे कि मैं नहीं कहता कि नागरी ही चले, बल्कि मैं चाहता हूँ कि नागरी भी चले। उनके ही विचारों से प्रेरणा लेकर

नागरी लिपि संगम की स्थापना की गयी है जो भारत के अन्दर और भारत के बाहर देवनागरी को उपयोग और प्रसार करने के लिये कार्य करती है। उन्होंने चार दक्षिण भारतीय भाषाएँ भी सीखीं और वेल्लोर जेल में लोक नागरी की लिपि तैयार की।

उन्होंने "कन्नड़" लिपि को "विश्व लिपियों की रानी" (विश्व लिपिगला रानी) कहा। भगवद गीता, आदि शंकराचार्य की कृतियाँ, बाइबिल और कुरान जैसी कई धार्मिक और दार्शनिक कृतियों के संक्षिप्त परिचय और आलोचनाएँ लिखीं। उन्होंने भगवद गीता का मराठी में अनुवाद किया था।

व्यौहार राजेंद्र सिंह

(14 सितंबर, 1900 - 2 मार्च, 1988)



स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्द दास

के साथ मिलकर व्यौहार राजेंद्र सिंह ने काफी प्रयास किए। इसके चलते उन्होंने दक्षिण भारत की कई यात्राएँ भी कीं। व्यौहार राजेंद्र सिंह हिंदी साहित्य सम्मलेन के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अमेरिका में आयोजित विश्व सर्वधर्म सम्मलेन में भारत का प्रतिनिधित्व किया जहाँ उन्होंने सर्वधर्म सभा में हिंदी में ही भाषण दिया जिसकी जमकर तारीफ हुई। संस्कृत, बांग्ला, मराठी, गुजराती, मलयालम, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि पर उनका अच्छा अधिकार था।

अनंत गोपाल शेवड़े (1911 - 1979)

अनंत गोपाल शेवड़े हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं लघुकथाकार थे। वे मराठी भाषी थे किंतु हिंदी में उन्होंने स्तरीय साहित्य सृजन किया। वे माखनलाल चतुर्वेदी के शिष्य एवं 'नागपुर टाइम्स' के संस्थापक थे। हिन्दी और अंग्रेज़ी पर उनका समान अधिकार था। उनके उपन्यास 'ज्वालामुखी' का भारत की 14 भाषाओं में अनुवाद कराया गया। उनके एक अन्य उपन्यास 'मंगला' को ब्रेल लिपि में भी प्रकाशित किया गया था। उनके 'मृगजाल' नामक उपन्यास पर उन्हें मध्य प्रदेश हिन्दी परिषद का सम्मान प्रदान किया गया। अनंत गोपाल शेवड़े के प्रयासों से 1976 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ था।

मधुकर राव चौधरी

(5 जून, 1919 - 8 जुलाई, 2010)

वे 1970 से मृत्युपर्यन्त महात्मा गांधी द्वारा स्थापित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष रहे। विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन की कल्पना उन्होने ही की। उन्होंने नागपुर और दिल्ली में क्रमशः पहला और तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित कराए। साथ ही



मॉरीशस में आयोजित दूसरे और चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व भी किया। इन सभी सम्मेलनों में, एक अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना

और उसमें सफलता के लिए सर्वसम्मति से प्रयास किए गए। उन्होंने वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के उपाध्यक्ष भी रहे। 1999 में इंग्लैंड में आयोजित छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी को विश्व भाषा बनाने में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें 'विश्व हिंदी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्रीपाद रघुनाथ जोशी

(1920 - 24 सितंबर, 2002)



महाराष्ट्र के कोल्हापूर में जन्मे श्रीपाद रघुनाथ जोशी ने ज्यादातर मराठी या हिंदी में अलग-अलग विषयों पर 194 किताबें लिखीं, जिनमें महात्मा गांधी के जीवन के विभिन्न पहलुओं

पर एक किताब, सात खंडों का यात्रा वृत्तांत और मुस्लिम संस्कृति पर एक किताब शामिल है। उन्होंने कुछ उर्दू कविताओं का मराठी में अनुवाद किया। कई शब्दकोशों

की रचना भी उन्होंने की। श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित हिंदी उपन्यास 'राग दरबारी' के मराठी अनुवाद के लिए उन्हें साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार (1990) से सम्मानित किया गया था।



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित एक हिन्दी सेवी संस्था है जिसकी स्थापना सन् 1936 ई. में हुई। इसके संस्थापकों में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्री सुभाषचन्द्र बोस, आचार्य नरेन्द्र देव, आचार्य काका कालेलकर, सेठ जमनालाल बजाज, बाबा राघवदास, श्री शंकरदेव, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, श्री हरिहर शर्मा, पं. वियोगी हरि, श्री नाथसिंह, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, बृजलाल बियाणी एवं श्री नर्मदा प्रसाद सिंह प्रमुख थे।

समिति की भारत के विभिन्न प्रदेशों में 25 से अधिक राज्य इकाइयाँ हैं और भारत के बाहर बीस देशों में उसकी शाखाएँ हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, के सुझाव के आधार पर ही 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। समिति के प्रयासों से ही सन 1975 में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में एवं तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का नई दिल्ली में आयोजन किया गया। समिति

की सतत् माँग और प्रयासों से तथा विश्व हिन्दी सम्मेलनों के मन्तव्य पर आधारित 'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' संसद में प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार द्वारा वर्धा में स्थापित किया गया तथा मॉरिशस में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' की स्थापना की गई।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, भारत का एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय की स्थापना भारत सरकार ने सन् 1997 में संसद द्वारा पारित एक अधिनियम द्वारा की थी। यह विश्वविद्यालय महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र की एक लालसा भी पूरी हुई जो



उनके मन-मस्तिष्क में छापी रही थी। वह लालसा थी 'अपने उद्योग से एक शुद्ध हिंदी की यूनिवर्सिटी स्थापित करना'। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबल हिंदी' की राह पर यह एक बड़ा मील का पत्थर है।



एक डोर में सबको जो है बाँधती, वह हिंदी है
हर भाषा को सगी बहन जो मानती, वह हिंदी है
भरी पूरी हो सभी बोलियाँ, यही कामना हिंदी है
गहरी हो पहचान आपसी, यही साधना हिंदी है
सागर में मिलती धाराएँ, हिंदी सबकी संगम है
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे, एक भरोसा अनुपम है
गंगा, कावेरी की धारा, साथ मिलाती हिंदी है
पूरब पश्चिम कमल पंखुड़ी, सेतु बनाती हिंदी है

गिरिजा प्रसाद माथुर

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर (10-14 जनवरी, 1975)

विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है। हिंदी को भारत की सीमाओं से परे दुनिया के अन्य देशों में प्रतिष्ठित करने, विशेष पहचान दिलाने, इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने और हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से सन 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की संकल्पना को मूर्त रूप दिया गया। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 14 जनवरी तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का बोध वाक्य था “वसुदेव कुटुंबकम्” और सम्मेलन का विषय था “हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्थिति”।



राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से यह ऐतिहासिक आयोजन हुआ। इस सम्मेलन की विशेषता यह भी थी कि यह हिंदीतर भाषी प्रदेश महाराष्ट्र में हुआ और इसके आयोजन के पीछे अधिकांश हिंदीतर भाषी लोग थे। प्रमुख रूप से हिंदी सेवी अनंत गोपाल शेवड़े, मधुकर राव चौधरी और ललन प्रसाद व्यास के अथक प्रयासों से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया।

नागपुर में जहां प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ था, उस स्थल का नाम विश्व हिंदी नगर रखा गया था। कई प्रवेश द्वार बनाए गए थे। प्रवेश द्वारों के नाम गोस्वामी तुलसी दास, मीराबाई, सूरदास, कबीर दास, नामदेव और रैदास के नाम पर रखे गए। सम्मेलन में आए अतिथियों के आवासों के नाम विश्व संगम, मित्र निकेतन और विद्या विहार आदि रखे गए थे। विश्व हिंदी नगर को भव्य रूप से सजाया संवारा गया था।

सम्मेलन का उद्घाटन भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य अतिथि तथा उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष के रूप में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर राम गुलाम उपस्थित थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा था “भारत और दूसरे देशों के लिए, जो इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं, यह एक ऐतिहासिक दिन है। हमें इस बात का गर्व है कि, जैसा 20वीं सदी के शुरू में भारत में सामाजिक जागरण हुआ उसकी रोशनी मॉरीशस में भी पहुंची। स्वामी दयानंद ने वेदों के आधार पर आर्य समाज की स्थापना की और यह आंदोलन 1920 में मॉरीशस में हुआ।” सम्मेलन में यूनेस्को का प्रतिनिधित्व अशर डिलियोन द्वारा किया गया।

सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए अनंत गोपाल शेवड़े ने कहा था “मानव के इतिहास का यह एक स्वर्णिम दिवस है जब इस प्राचीन ऐतिहासिक नगर नागपुर में सर्वप्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। आज समूचे देश का भाग्य जाग उठा है। हमें तो ऐसा लगता है महामानव की अनंत यात्रा में एक नया मोड़ आया है।”



चार दिन चले इस सम्मेलन में 30 देशों के लगभग 120 प्रतिनिधियों ने हिंदी भाषा पर अपने अपने विचार व्यक्त किए। विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया। इस डाक टिकट को मॉरिशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर राम गुलाम, महाराष्ट्र के राज्यपाल अलि आवर जंग तथा सम्मेलन के महासचिव अनंत गोपाल शेवड़े को भेंट किया गया।

ललन प्रसाद व्यास ने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन को स्मरण करते हुए प्रवासी भारतीय समाज द्वारा प्रकाशित हिंदी की विश्व यात्रा पत्रिका में अपने लेख में कहा था “जनवरी 1974 में शेवड़े जी ने दिल्ली आकर मुझे एक अत्यंत सुखद सूचना दी कि विनोबा जी और इंदिरा जी की भेंट फलश्रुति विश्व हिंदी सम्मेलन की योजना के रूप में सामने आ रही है जिस पर प्रधानमंत्री जी ने सहानुभूति पूर्वक विचार करना स्वीकार कर लिया है।” सम्मेलन की सफलता पर ललन प्रसाद व्यास लिखते हैं “मुझे स्मरण है कि शेवड़े जी ने किसी और प्रसंग में यह विश्वास पूर्वक कहा था देखिएगा सम्मेलन का सारा वातावरण अभिमतित जैसा होगा

सम्मेलन में **मधुकर राव चौधरी** जी, जो महात्मा गांधी द्वारा स्थापित अखिल भारतीय राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष रहे, वयोवृद्ध गांधीवादी दार्शनिक एवं लेखक **काका साहेब कालेलकर** सहित कई विशिष्ट लोगों ने हिंदी भाषा के सेवा धर्म को रेखांकित किया। सम्मेलन में प्रसिद्ध समाज सेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी आचार्य विनोबा भावे जी द्वारा भेजे गए संदेश का पाठ किया गया।



प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी भाषा के उत्थान और प्रचार प्रसार के लिए प्रस्ताव पारित किए गए। पहला प्रस्ताव - संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिलाया जाए। दूसरा प्रस्ताव - विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना वर्धा में हो। तीसरा प्रस्ताव विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अत्यंत विचार पूर्वक योजना बनाई जाए।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का परिणाम आज वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के रूप में देखा जा सकता है।

हिंदी दुनिया की सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारत और विश्व के दूसरे देशों में इसे बोलने और समझने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। निश्चित ही इस तरह के आयोजन हिंदी भाषा और हिंदी भाषियों को विश्व पटल पर एक महत्वपूर्ण स्थान पर स्थापित करने में सफल होंगे। विश्व हिंदी सम्मेलन की इस पहल का ही परिणाम आज हमारे सामने विश्व हिंदी दिवस है जो हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है।

प्रस्तुति - राजभाषा शाखा

भारत के दिल में बसा नागपुर शहर

नागपुर शहर भारत के ठीक मध्य में स्थित है। यह महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र का हिस्सा है, जिसमें राज्य के पूर्वी भाग के 11 जिले शामिल हैं, जिन्हें अमरावती और नागपुर संभागों में बांटा गया है।

नागपुर महाराष्ट्र की शीतकालीन राजधानी है, जहां महाराष्ट्र राज्य विधानसभा का वार्षिक शीतकालीन सत्र आयोजित होता है। इसके अलावा, यहाँ मुंबई उच्च न्यायालय की एक क्षेत्रीय शाखा भी स्थित है। नागपुर को इसके संतरे के लिए जाना जाता है और इसे कभी-कभी "ऑरेंज सिटी" भी कहा जाता है क्योंकि यह क्षेत्र में उगाए गए संतरे का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। इसे भारत का "टाइगर कैपिटल" या "टाइगर गेटवे" भी कहा जाता है, क्योंकि इस शहर के आस-पास कई बाघ अभयारण्यों का स्थान है।



नागपुर भारत के मध्य भाग में स्थित है, जिससे यह व्यापार और संचार के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन जाता है। इसके भौगोलिक स्थान ने इसे "भारत का भौगोलिक केंद्र" का दर्जा दिलवाया है। यह भारत के सभी हिस्सों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है, यहाँ की सड़क और रेल संरचना बहुत मजबूत है, जिससे यह व्यापारियों और यात्रियों के लिए एक आदर्श गेटवे बन जाता है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़

और तेलंगाना जैसे राज्यों के पास होने के कारण, यह व्यापार और पर्यटन के दृष्टिकोण से भी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।



निकिता भारके
प्रवर श्रेणी लिपिक

ब्रिटिश काल में नागपुर केंद्रीय प्रांत और बरेली राज्य की राजधानी था। राज्य के पहले पुनर्गठन के बाद, केंद्रीय प्रांत और बरेली को भारतीय राज्य मध्य प्रदेश के रूप में पुनर्गठित किया गया था, जिसमें नागपुर इसकी राजधानी थी। 1956 में जब भारतीय राज्यों को भाषाई आधार पर पुनर्गठित किया गया, तो नागपुर और बरेली क्षेत्रों को बंबई राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया, जो 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों में विभाजित हो गया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दृष्टिकोण से, नागपुर एक ऐतिहासिक शहर है क्योंकि यहाँ 1920 में असहमति आंदोलन की शुरुआत की गई थी। जब महात्मा गांधी जी ने 1930 में साबरमती आश्रम से दांडी के लिए अपना पदयात्रा शुरू किया, तो उन्होंने यह निर्णय लिया था कि वे तब तक साबरमती नहीं लौटेंगे जब तक भारत को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो जाती। उस समय स्वतंत्रता नहीं मिली और गांधी जी को दो साल से अधिक समय तक जेल में रहना पड़ा। रिहा होने के बाद उन्होंने कुछ समय यात्रा में बिताया। उन्होंने केंद्रीय भारत के किसी गांव को अपना मुख्यालय बनाने का

निर्णय लिया। वह 1934 में जमनालालजी बजाज के निमंत्रण पर वर्धा आए। अप्रैल 1936 में, गांधी जी ने शेगांव गांव में अपना निवास स्थापित किया, जिसे उन्होंने "सेवाग्राम" नाम दिया, जिसका अर्थ 'सेवा का गांव' होता है। तभी से, सेवाग्राम एक प्रेरणादायक स्थल बन गया। यहाँ कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों और आंदोलनों पर निर्णय लिया गया। यह गांधी जी के द्वारा देश निर्माण की गतिविधियों के लिए कई संस्थाओं का केंद्रीय स्थल बन गया।

शेगांव (अब सेवाग्राम) एक छोटा सा गांव है जो वर्धा शहर से 8 किमी और नागपुर से 75 किमी दूर स्थित है। कई व्यावहारिक कठिनाइयों के बावजूद, गांधी जी ने यहाँ बसने का निर्णय लिया। हालांकि उन्होंने केवल कस्तूरबा को अपने साथ रखने का इरादा किया था, काम के दबाव ने उन्हें अधिक सहयोगियों को अपने साथ रखने की आवश्यकता महसूस कराई, जब तक कि सेवाग्राम आश्रम एक पूर्ण संस्थान नहीं बन गया। वह कुटिया, जिसे अब "बापू कुटीर" कहा जाता है, वह स्थान है जहाँ गांधी जी ने 1946 तक अधिक समय बिताया, जब वह नोआखली गए और कभी भी सेवाग्राम वापस नहीं लौटे।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 1947 में, केंद्रीय प्रांत



और बरेली राज्य भारत का हिस्सा बन गया और 1950 में यह मध्य प्रदेश राज्य के रूप में पुनर्गठित हुआ, फिर से नागपुर उसकी राजधानी बना। हालांकि, जब 1956 में भारतीय राज्यों को भाषाई आधार पर पुनर्गठित किया गया, तो नागपुर और बरेली क्षेत्रों को बंबई राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया, जो 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों में विभाजित हो गया।



भारत का पहला वस्त्र मिल, जिसे "एम्प्रेस मिल" के नाम से जाना जाता है, 1 जनवरी 1877 को नागपुर में शुरू किया गया था, वही दिन था जब रानी विक्टोरिया को भारत की सम्राटिनी घोषित किया गया था।

जीरो माइल:

"जीरो माइल" भारत में नागपुर, महाराष्ट्र में स्थित "जीरो माइल स्टोन" नामक एक स्मारक को संदर्भित करता है, जिसे भारत के भौगोलिक केंद्र के रूप में माना जाता है; यह वह बिंदु है, जहाँ से भारत के अन्य सभी हिस्सों की दूरी की गणना की जाती है, और इसे ब्रिटिशों द्वारा 1907 में ग्रेट ट्रिगोनोमेट्रिकल सर्वे ऑफ इंडिया के दौरान स्थापित किया गया था। भारत के केंद्र में होने के कारण, कहा जाता है कि ब्रिटिशों का योजना थी कि वे नागपुर को भारत की दूसरी राजधानी शहर बनाएँ।



नागपुर, अपनी ऐतिहासिकता, संस्कृति और आधुनिकता का मिश्रण है, और यह एक उभरता हुआ

शहर है। यह व्यापार, शिक्षा, और स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करता है, जबकि इसका समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर भी संरक्षित है। शहर का रणनीतिक स्थान, बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था, और विविध संस्कृति इसे भारत के सबसे रोमांचक शहरी केंद्रों में से एक बनाते हैं। चाहे आप एक समृद्ध ऐतिहासिक अनुभव की तलाश कर रहे हों, व्यापार के अवसरों की खोज कर रहे हों, या भारत की सांस्कृतिक विविधता में झाँकने के लिए, नागपुर एक ऐसा शहर है जो सभी के लिए कुछ न कुछ पेश करता है।

नागपुर के पर्यटन स्थल

नागपुर महाराष्ट्र राज्य की शीतकालीन राजधानी है, जो एक तेजी से बढ़ता हुआ महानगर और मुंबई और पुणे के बाद महाराष्ट्र का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। नागपुर यह महानगर क्षेत्र भारत में 13वां सबसे बड़ा शहरी समूह है। इसे हाल ही में भारत के सबसे स्वच्छ शहर और दूसरे सबसे हरे भरे शहर का दर्जा दिया गया है। महाराष्ट्र राज्य विधानसभा "विधानसभा" के वार्षिक शीतकालीन सत्र की सीट होने के अलावा, नागपुर महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र का एक प्रमुख वाणिज्यिक और राजनीतिक केंद्र भी है, और इस क्षेत्र में उगाए जाने वाले संतरे का एक प्रमुख व्यापार केंद्र होने के कारण पूरे देश में "ऑरेंज सिटी" के रूप में भी प्रसिद्ध है। इसके अलावा, शहर आरएसएस का मुख्यालय होने और बौद्ध आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान होने से राजनीतिक महत्व भी प्राप्त करता है।

कन्हान नदी की एक सहायक नदी नाग नदी, एक सर्पिल रास्ते में बहती है और इसलिए इसका नाम "नाग"

रखा गया है, जो की मराठी में साँप के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। और इसलिए, नदी और शहर का नाम नागपुर रखा गया है। जबकि अन्य कहते हैं कि नदी नागपुर के पुराने शहर से होकर बहती है

और इसलिए शहर का नाम इस नदी के नाम पर रखा गया है। नागपुर को बाघों की राजधानी से भी जाना जाता है, क्योंकि विदर्भ क्षेत्र में कई राष्ट्रीय उद्यान समविष्ट है।

निम्नलिखित गतिविधियाँ/सांस्कृतिक/ भोजन/ स्थान नागपुर में हम देख सकते हैं जो नागपुर को और भी उचाइयों पर ले जाते हैं।



प्रशांत इंगले
प्रवर श्रेणी लिपिक



कालिदास महोत्सव : कालिदास महोत्सव प्रतिवर्ष नवंबर माह में दो दिनों के लिए रामटेक और नागपुर में मनाया जाता है। नागपुर के जिला कलेक्टर कार्यालय के सहयोग से MTDC द्वारा आयोजित, संगीत, नृत्य और नाटक का यह महोत्सव कालिदास के सम्मान में आयोजित किया जाता है। कालिदास भारत के एक महान संस्कृत कवि और नाटककार थे, जो अपने ऐतिहासिक नाटक शाकुंतलम, कुमारसंभव, ऋतुसंहार और महाकाव्य मेघदूत उर्फ मेघदूतम के लिए प्रसिद्ध थे। ऐसा कहा जाता है कि सुरम्य रामटेक ने कालिदास को अपना प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य मेघदूतम लिखने के लिए प्रेरित किया। कालिदास महोत्सव के दौरान, संगीत, नृत्य और नाटक की हस्तियाँ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए यहाँ एकत्रित होती हैं। यह महोत्सव विदर्भ क्षेत्र के स्वर्णिम काल की यादें ताज़ा करता है। भारत के विभिन्न भागों से लोग पूरे उत्साह के साथ इस महोत्सव में भाग लेने के लिए यहाँ आते हैं।

सिताबर्डी किला : नागपुर में सिताबर्डी किला, 1817 के सिताबर्डी युद्ध का स्थल, नागपुर के मध्य में एक छोटी पहाड़ी के ऊपर स्थित है। किले का निर्माण नागपुर साम्राज्य के अप्पा साहिब या मुधोजी द्वितीय भोंसले ने तीसरे अंग्लो-मराठा युद्ध के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया

कंपनी के खिलाफ लड़ने से ठीक पहले करवाया था। पहाड़ी के आसपास का क्षेत्र अब सिताबर्डी के नाम से जाना जाता है और नागपुर के लिए एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र है। किले के अंदर कई ब्रिटिश सैनिकों की कब्रें और एक कोठरी है जहाँ महात्मा गांधी को कैद किया गया था। वर्तमान में, सिताबर्डी किला प्रादेशिक सेना के कार्यालय का घर है। किला आम जनता के लिए केवल दो राष्ट्रीय छुट्टियों- 26 जनवरी और 15 अगस्त को खुलता है। यहां के आसपास के आकर्षणों में पहाड़ी के पीछे गणेश मंदिर (टेकड़ी गणपति), भगवान शिव और विष्णु के प्राचीन मंदिर, स्कैश कोर्ट, इनडोर स्विमिंग पूल और किले की पूर्वी सीमा दीवार के पास नवाब कादर अली (टीपू सुल्तान के परपोते) का मकबरा शामिल हैं।



नागरधन किला, रामटेक: नागपुर से 38 किलोमीटर उत्तर-पूर्व और रामटेक से लगभग 9 किलोमीटर दक्षिण में स्थित नागरधन एक पुराना शहर है जिसकी स्थापना एक सूर्यवंशी राजा ने की थी। नागरधन का मुख्य आकर्षण नागरधन किला है, जिसे भोंसले वंश के मराठा राजा राजा रघुजी भोंसले ने बनवाया था। किले के अंदर चौकोर आकार का महल है, जिसमें बुर्जों के साथ एक बाहरी प्राचीर है और इमारतों के चारों ओर एक

आंतरिक दीवार है। उत्तर-पश्चिम की ओर किले का मुख्य द्वार अभी भी अच्छी स्थिति में है। किले के अंदर, महल के पास एक कुआं है, जिसमें लोगों के रहने के लिए दो मंजिलें हैं। इसमें देवी दुर्गा की एक मूर्ति भी है।



जीरो माइल: नागपुर में जीरो माइल नागपुर देश के बिल्कुल बीच में स्थित है, जीरो माइल मार्कर भारत के भौगोलिक केंद्र को दर्शाता है। जीरो माइल स्टोन को अंग्रेजों ने बनवाया था, जिन्होंने इस पॉइंट का इस्तेमाल सभी दूरियों को मापने के लिए किया था। जीरो माइल स्टोन में चार घोड़े और बलुआ पत्थर से बना एक स्तंभ है। यह नागपुर के विधान भवन के दक्षिण पूर्व में स्थित है। अंग्रेज शासकों ने नागपुर को भारत का केंद्र माना और इसलिए इस पॉइंट की पहचान की और जीरो माइल स्टोन का निर्माण किया। देश के केंद्र में होने के कारण, उनकी योजना नागपुर को दूसरा राजधानी शहर बनाने की भी थी।



मारबत उत्सव : नागपुर शहर में खास तौर पर मनाया जाने वाला मारबत उत्सव इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण उत्सव है जो शहर को बुरी आत्माओं से बचाने के लिए मनाया जाता है। इस उत्सव के दौरान नागपुर के लोग अपने भगवान की पूजा करते हैं ताकि उन्हें बुरी आत्माओं से बचाया जा सके और वे बुरी शक्तियों की मूर्तियाँ बनाते हैं। इन मूर्तियों को शहर के सभी इलाकों से जुलूस के रूप में एक विशाल मैदान में ले जाया जाता है। उन्हें एक साथ जलाया जाता है, इस विश्वास के साथ कि शहर सभी प्रकार की बुराइयों से मुक्त हो जाएगा। लोग उस दिन नए कपड़े और गहने खरीदते हैं और पहनते हैं और महिलाएँ स्वादिष्ट व्यंजन बनाती हैं और सभी को बाँटती हैं। उत्सव के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ जैसे नृत्य, नाटक आदि का भी आयोजन किया जाता है।



रामटेक : में राम का एक ऐतिहासिक मंदिर है। ऐसा माना जाता है कि रामटेक वह स्थान था जहाँ हिंदू देवता राम ने वनवास के दौरान विश्राम किया था, इसलिए इसका नाम रामटेक पड़ा। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, हिंदू ऋषि अगस्त्य का आश्रम रामटेक के पास ही स्थित था। वर्तमान मंदिर का निर्माण नागपुर के मराठा शासक रघुजी भोंसले ने 18वीं शताब्दी में छिंदवाड़ा के देवगढ़ किले पर अपनी जीत के बाद करवाया था। यह

स्थान संस्कृत कवि कालिदास से भी जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि कालिदास ने मेघदूत की रचना रामटेक की पहाड़ियों में ही की थी।



फुटाला झील : फुटाला झील भारत के महाराष्ट्र राज्य के नागपुर में स्थित एक झील है। यह झील 60 एकड़ (24 हेक्टेयर) में फैली हुई है। नागपुर के भोसले राजाओं द्वारा निर्मित यह झील अपने रंगीन फव्वारों के लिए जानी जाती है। शाम के समय यह जगह हैलोजन लाइट और तांगा (गाड़ी) की सवारी से जगमगा उठती है। झील तीन तरफ से जंगल से घिरी हुई है और चौथी तरफ एक सुंदर झील तट है।



दीक्षाभूमि : दीक्षाभूमि, जिसे दीक्षा भूमि भी लिखा जाता है, भारत के महाराष्ट्र राज्य के नागपुर शहर में स्थित नवयान बौद्ध धर्म का एक पवित्र स्मारक है जहाँ डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने अपने लगभग 500,000 अनुयायियों के साथ, मुख्य रूप से दलितों ने 14 अक्टूबर 1956 को अशोक

विजयादशमी पर बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। डॉ. अंबेडकर ने भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बौद्ध धर्म में ऐसे कई सामूहिक धर्मांतरण को प्रेरित किया। दीक्षाभूमि नागपुर, महाराष्ट्र में है, जिसे एक पवित्र स्थान होने के नाते सामाजिक क्रांति की प्रेरणाभूमि (प्रेरक भूमि) और वर्ग संघर्ष, भेदभाव, असमानता के खिलाफ सामाजिक कार्यों की तैयारी के रूप में माना जाता है, साथ ही भारत में अंबेडकरवादी बौद्ध धर्म का पहला तीर्थस्थल भी है। हर साल लाखों तीर्थयात्री दीक्षाभूमि आते हैं, खास तौर पर धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस यानी सम्राट अशोक विजयादशमी ("सामूहिक धर्मांतरण समारोह दिवस") और 14 अक्टूबर को, वह यादगार दिन जब बी.आर. अंबेडकर ने यहां बौद्ध धर्म अपनाया और धर्मांतरण किया। उनका अंतिम धार्मिक कार्य बौद्ध धर्म अपनाना और भारत को बौद्ध राष्ट्र एक प्रबुद्ध भारत बनाने की कल्पना करना था आज, उनकी याद में दुनिया का सबसे बड़ा स्तूप इस स्थान पर बनाया गया है।



डैगन पैलेस मंदिर : डैगन पैलेस मंदिर, जिसे नागपुर का लोटस टेम्पल भी कहा जाता है, भारत के महाराष्ट्र के नागपुर जिले में कामठी स्थित एक बौद्ध मंदिर है। इस मंदिर की स्थापना 1999 में हुई थी। डैगन पैलेस मंदिर परिसर में एक नक्काशीदार चंदन की मूर्ति है जो बुद्ध से जुड़ी हुई है, और यह इमारत आस्था रखने वालों

के लिए एक तीर्थ स्थल है।



गणेश टेकड़ी मंदिर : नागपुर के टेकड़ी गणपति बाप्पा विघ्नहर्ता के रूप में माने जाते हैं। नागपुर शहर के सीताबर्डी स्थित गणपति का यह भव्य दिव्य मंदिर करीब 250 वर्ष पुराना बताया जाता है। कहा जाता है कि इस मंदिर में भगवान श्रीगणेश की मूर्ति खुद से विराजमान है। यानी 250 वर्ष पूर्व पीपल के पेड़ के नीचे यह प्रतिमा खुद प्रकट हुई थी। बाप्पा की मूर्ति आज भी पीपल के पेड़ के नीचे ही विराजमान है। बाप्पा को चांदी का मुकुट लगाया गया है।

मान्यता है कि टेकड़ी गणपति बाप्पा के दर्शन को आनेवाला हर कोई भक्त चाहे वो गरीब हो या अमीर, उसकी हर मनोकामना पूरी हो जाती है। यहां बाप्पा के दर्शन के लिये साल भर भक्तों का तांता लगा रहता है। विशेष रूप से गणेश चतुर्थी के दिन हजारों की संख्या में लोग यहां बाप्पा का दर्शन करने आते हैं। यहां विराजमान गणपति को विदर्भ के अष्टविनायक में सबसे पहले स्थान का गणपति भी माना जाता है। मान्यता है कि आज से करीब 250 साल पहले भोसलेकालीन इस प्राचीन मंदिर में भोसले राजघराने के राजा महाराजा युद्ध पर जाने से पहले अथवा कोई भी शुभ कार्य करने से पहले इसी मंदिर में आते थे और फिर अपने कार्य पर जाते थे। बताया जाता है उस वक्त इस शहर में चारों तरफ पानी भरा होता था। ऐसे में राजा

महाराजा नाव के सहारे इस मंदिर में दर्शन करने आते थे। इस पवित्र स्थान पर गणपति तो मौजूद हैं ही। यहां पीपल के पेड़ के रूप में भगवान विष्णु भी वास करते हैं। वैसे तो हर पूजा की शुरुआत गणपति की अराधना से होती है लेकिन नागपुर के टेकड़ी में गणपति के साथ-साथ विष्णु की भी पूजा करनी होती है। इस तरह यहां आने वाले भक्तों को एक परिक्रमा करने से दो देवताओं की पूजा का फल मिल जाता है।



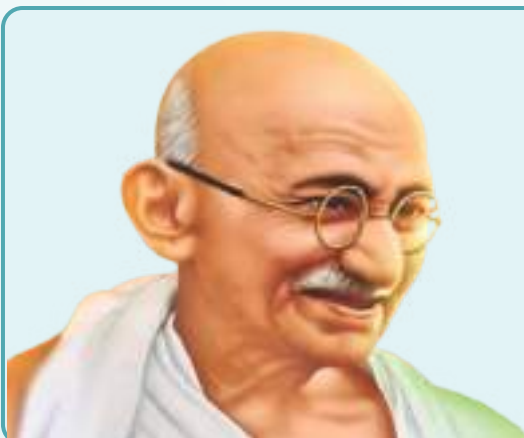
ताजुद्दीन बाबा दरगाह : शहर में मुस्लिम आबादी भी काफी है और मुसलमानों के लिए प्रसिद्ध पूजा स्थलों में जामा मस्जिद-मोमिनपुरा और बोहरी जमातखाना-इतवारी शामिल हैं। ताजुद्दीन मुहम्मद बदरुद्दीन की सबसे प्रसिद्ध दरगाह (दरगाह) ताजबाग में है। संत ताजुद्दीन बाबा के जन्मदिवस 27 जनवरी को वार्षिक उर्स बड़े उत्साह और एकता के साथ मनाया जाता है। यह दरगाह का दृश्य देखने में काफी सुंदर है। कई भक्त देश-विदेश से यहां ताजुद्दीन बाबा के दर्शन हेतु आते हैं।



व्यंजन : विदर्भ क्षेत्र का अपना विशिष्ट व्यंजन है जिसे वरहाड़ी व्यंजन या साओजी व्यंजन के रूप में जाना जाता है। साओजी या सावजी व्यंजन सावजी समुदाय का मुख्य व्यंजन है। यह पारंपरिक भोजन अपने मसालेदार स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। ग्रेवी में इस्तेमाल किए जाने वाले विशेष मसालों में काली मिर्च, सूखा धनिया, तेजपत्ता, ग्रे इलायची, दालचीनी, लौंग और खसखस का पर्याप्त उपयोग शामिल है। मांसाहारी भोजन विशेष रूप से चिकन और मटन आमतौर पर नागपुर में साओजी प्रतिष्ठानों में खाया जाता है। नागपुर में कई सावजी भोजनालय हैं जो महाराष्ट्र में इतने लोकप्रिय हैं कि प्रसिद्ध भारतीय शेफ संजीव कपूर ने एक बार अपने एक टीवी शो में सावजी मटन दिखाया था। संतरा बर्फी भी एक प्रसिद्ध व्यंजन है, जो संतरे से बनता है, जो नागपुर में स्थानीय रूप से उत्पादित होता है। मोमिनपुरा शहर का बहुसंख्यक मुस्लिम क्षेत्र है और यह अपने मुगल व्यंजनों और बिरयानी के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर कड़कनाथ चिकन नामक दुर्लभ काले मुर्गियों के लिए भी प्रसिद्ध है, जिन्हें सावजी शैली में पकाया जाता है। नागपुर तरी पोहा के लिए भी प्रसिद्ध है, जो चने की

मसालेदार करी के साथ परोसा जाता है और यहाँ कई खाद्य पदार्थ हैं प्रत्येक का इसे तैयार करने और परोसने का अपना तरीका है। समोसे भी नागपुर में प्रसिद्ध हैं और कई रेस्तरां और खाद्य स्थलों पर उपलब्ध हैं। एक अन्य प्रसिद्ध भोजन पाटोदी और कढ़ी है।

नागपुर शहर बड़ी तेजी से उभरता शहर बन गया है जिसमें मेट्रो, अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा, परिवहन, मिहान सेज और रेल मार्ग सुविधा काफी उपलब्ध है जो की नागपुर शहर को और कई उचाइयों पर लेके जा रहा है। नागपुर बूटीबोरी स्थित पंचतारांकित ओदयोगिक क्षेत्र है जो काफी बड़े पैमाने में फैला है जहा पर बड़े से बड़े कंपनियां अपने वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। नागपुर में प्रत्येक वर्ष खासदार महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें सांस्कृतिक से लेकर क्रीडा तक का बड़े पैमाने पर आयोजन किया जाता है। इस महोत्सव में युवा से लेके हर वर्ग के व्यक्ति को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है जिससे हर व्यक्ति में छुपी हुई कलाकारी इस मंच से प्रसिद्ध हो सके और राष्ट्रीय स्तर पर उसे जाने का एक रास्ता मिल सके।



“हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय-हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।”

महात्मा गांधी

भारत की टाइगर कैपिटल : नागपुर और इसके प्रसिद्ध टाइगर रिज़र्व

भारत के दिल में स्थित, नागपुर को "भारत की टाइगर कैपिटल" के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह देश के कुछ महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध टाइगर रिज़र्वों के पास स्थित है। शहर के पास स्थित दो प्रमुख रिज़र्व—पेंच टाइगर रिज़र्व और ताडोबा अंधारी टाइगर रिज़र्व—भारत के बाघ संरक्षण प्रयासों में अहम भूमिका निभाते हैं और देश में बाघों को देखने और वन्यजीवों का अनुभव करने के लिए सबसे बेहतरीन स्थानों में से एक हैं। यह लेख इन प्रसिद्ध टाइगर रिज़र्वों के इतिहास, जैवविविधता, सफारी अनुभव, और पहुंच के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

नागपुर का बाघों और वन्यजीवों के संरक्षण से जुड़ा इतिहास 20वीं सदी के शुरूआत में है। शहर का केंद्रीय स्थान, जो हरे-भरे जंगलों और वन्यजीवों से घिरा हुआ है, इसे बाघों और अन्य वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास बनाता था। प्रोजेक्ट टाइगर अभियान की स्थापना 1973 में हुई थी, जो बाघों के संरक्षण के लिए एक राष्ट्रीय अभियान था। इस अभियान ने पेंच और ताडोबा-अंधारी जैसे रिज़र्वों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमें बाघों की आबादी का संरक्षण किया गया। नागपुर का ऐतिहासिक महत्व केवल बाघों के संरक्षण तक सीमित नहीं है।

पेंच टाइगर रिज़र्व - स्थान और विवरण

पेंच टाइगर रिज़र्व महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है, जो नागपुर से लगभग 90 किलोमीटर दूर है। यह

रिज़र्व पेंच नदी के नाम पर है, जो क्षेत्र से होकर बहती है और जंगल, पहाड़ियों और घास के मैदानों का एक अद्भुत परिदृश्य बनाती है। यह 1179.63 वर्ग



तेजा वेंकट रमना
बहु कार्य कर्मचारी

किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और यह

सतपुड़ा पहाड़ियों के पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा है, जो विविध वनस्पतियों और जीवों के लिए जाना जाता है।

पेंच टाइगर रिज़र्व को विशेष रूप से रुडयार्ड किपलिंग के द जंगल बुक के प्रेरणा स्रोत के रूप में जाना जाता है। पेंच के घने जंगलों में विशाल सागौन के पेड़ और लहराती पहाड़ियां बाघों सहित अन्य वन्यजीवों के लिए एक आदर्श आवास प्रदान करती हैं।

जैवविविधता

यह रिज़र्व वन्यजीवों से भरपूर है, लेकिन बंगाल टाइगर वह प्रमुख प्रजाति है, जो सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र है। पेंच में बाघों की अच्छी खासी आबादी है और यह प्रजाति के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाघों के अलावा, इस रिज़र्व में तेंदुआ, स्लॉथ बियर, जंगली कुत्ते (धोले), सियार, मोर, हिरण, की प्रजातियां जैसे चीतल, सांबर, और नीलगाय सहित अन्य मांसाहारी और शाकाहारी जीवों की उपस्थिति है।

यहां के पक्षियों की विविधता भी अद्वितीय है, जिनमें क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल, भारतीय रोलर, और कई प्रजातियों के गिद्ध और जलपक्षी शामिल हैं। रिज़र्व की वनस्पति में मुख्य रूप से सागौन के जंगल हैं, जिनमें तेंदू, महुआ, और साल जैसे पेड़ शामिल हैं।

सफारी और आगंतुक अनुभव

पेंच में आगंतुकों के लिए सफारी की व्यवस्था है, जिसमें वे वन्यजीवों और सुंदर परिदृश्यों का अनुभव कर सकते हैं। जीप सफारी, सफारी का मुख्य तरीका है, और आगंतुक दिन में सुबह या शाम के समय सफारी में जा सकते हैं। अक्टूबर से जून तक का समय सबसे अच्छा होता है, जिसमें दिसंबर से मार्च तक का समय विशेष रूप से बाघों को देखने के लिए आदर्श माना जाता है। इंडियाहाइक जैसी कंपनियां पेंच टूर आयोजित करती हैं, जो प्राकृतिक ट्रेल्स और वाइल्डलाइफ ट्रेक जैसी गतिविधियां प्रदान करती हैं, जो आगंतुकों को अधिक विस्तृत और गहरे तरीके से जंगल की सैर करने का अवसर देती हैं। ये गतिविधियां उन लोगों के लिए आदर्श हैं जो मार्ग से हटकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहते हैं और पारिस्थितिकी पर्यटन में भाग लेना चाहते हैं।

जंगल के इस शांत वातावरण में कैंपिंग की व्यवस्था भी की जाती है, जिससे यात्री तारों के नीचे सोने का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं और जंगल की आवाजों को सुन सकते हैं।

पेंच कैसे पहुंचें

- **हवाई मार्ग:** पेंच के सबसे निकटतम हवाई अड्डा नागपुर एयरपोर्ट है, जो पेंच से लगभग 90 किलोमीटर दूर है।
- **रेल मार्ग:** पेंच के पास का सबसे नजदीकी रेलवे

स्टेशन सिवनी है, जो रिज़र्व से लगभग 70 किलोमीटर दूर है, लेकिन नागपुर रेलवे स्टेशन बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करता है।

- **सड़क मार्ग:** पेंच नागपुर से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है, और पर्यटकों के लिए टैक्सी और बसें उपलब्ध हैं।

ताडोबा अंधारी टाइगर रिज़र्व - स्थान और विवरण

ताडोबा अंधारी टाइगर रिज़र्व महाराष्ट्र का सबसे पुराना और सबसे बड़ा टाइगर रिज़र्व है, जो नागपुर से लगभग 140 किलोमीटर दूर स्थित है। यह 1,727 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है और महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में स्थित है। यह रिज़र्व ताडोबा झील और अंधारी नदी के नाम पर है, जो क्षेत्र की जैवविविधता में योगदान करते हैं।

ताडोबा को अक्सर "महाराष्ट्र के टाइगर रिज़र्वों का रत्न" कहा जाता है, और यह बाघों को जंगल में देखने के लिए भारत के बेहतरीन स्थानों में से एक है। रिज़र्व की भौगोलिक विशेषताएं विविध हैं, जिसमें घने जंगल, घास के मैदान और जलाशय शामिल हैं, जो वन्यजीवों के लिए आदर्श आवास प्रदान करते हैं।

सफारी और आगंतुक अनुभव

पेंच की तरह ताडोबा में भी आगंतुकों के लिए सफारी का आयोजन किया जाता है, जिसमें जीप सफारी और कैटर सफारी शामिल हैं। ताडोबा में बाघों के दर्शन की संभावना बहुत अधिक होती है। आगंतुकों को विशेष रूप से अक्टूबर से जून तक सफारी का आनंद लेना चाहिए, और दिसंबर से मार्च तक का समय बाघों को देखने के लिए सर्वोत्तम होता है।

ताडोबा कैसे पहुंचें

- **हवाई मार्ग:** ताडोबा के सबसे निकटतम हवाई

अड्डा नागपुर एयरपोर्ट है, जो रिज़र्व से लगभग 140 किलोमीटर दूर है।

- **रेलमार्ग:** ताडोबा के पास का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन चंद्रपुर है, जो रिज़र्व से लगभग 30 किलोमीटर दूर है।
- **सड़क मार्ग:** ताडोबा नागपुर से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है, और यह एक सड़क यात्रा के लिए 3-4 घंटे का समय लेता है।

निष्कर्ष

नागपुर, जो पेंच टाइगर रिज़र्व और ताडोबा अंधारी टाइगर रिज़र्व के पास स्थित है, सचमुच "भारत की टाइगर कैपिटल" का दर्जा प्राप्त करता है। ये रिज़र्व न केवल बाघों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि वन्यजीव प्रेमियों के लिए भारत में वन्यजीवों का

सबसे रोमांचक अनुभव प्रदान करते हैं। चाहे आप सफारी के दौरान बाघों को जंगल में देखना चाहते हों, विभिन्न जीवों और पक्षियों की विविधता का आनंद लेना चाहते हों, या भारत के प्राकृतिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक झलक चाहते हों, पेंच और ताडोबा दोनों रिज़र्व एक आदर्श गंतव्य हैं।

रुडयार्ड किपलिंग के द जंगल बुक के साहित्यिक योगदान के कारण पेंच और ताडोबा दोनों क्षेत्रों को विशेष रूप से पहचान मिली है, और इन रिज़र्वों में प्राकृतिक ट्रेल्स, कैपिंग और विशेष सफारी टूर जैसी गतिविधियों से जुड़ी सैरों का अनुभव और भी यादगार बनता है। इंडियाहाइक जैसी कंपनियां इन अनुभवों को और भी रोमांचक बनाती हैं।



लोकतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

(राजभाषा पखवाड़ा 2024 के दौरान पुरस्कृत निबंध)

लोकतंत्र का अर्थ है, शासन की ऐसी व्यवस्था जिसमें सत्ता किसी खास वर्ग के हाथ में न होकर वरन जनता के हाथ में हो। अमेरिकी राष्ट्रपति, अब्राहम लिंकन की परिभाषा के अनुसार "लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन है।" प्रो. लॉर्ड ब्राइस के अनुसार "प्रजातंत्र वह शासन प्रणाली है जिसमें कि शासन शक्ति एक विशेष वर्गों में निहित न रहकर समाज के सदस्य में निहित होती है।"



आशुतोष कुमार
आशुलिपिक

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1) हम भारतीयों को अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है। विश्व के किसी भी लोकतंत्र के जीवित रहने के लिए अभिव्यक्ति की आज़ादी का होना उतना ही जरूरी है जितना किसी व्यक्ति के जीने के लिए हवा। हालिया संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने कहा था कि, "कार्यपालिका, न्यायपालिका और व्यवस्थापिका की आलोचना देशद्रोह नहीं कही जा सकती है।"

"अर्थात् देश का संविधान हमें इस बात की इजाजत देता है कि जिस कार्यपालिका को हमने चुना है, जो न्यायपालिका हमारे न्याय के लिए बनी है और जो व्यवस्थापिका इनकी स्थापना की जिम्मेदारी लेती है, अगर हमें उनमें कुछ बुराइयाँ या सुधार के आसार नज़र आते हैं तो हमें निःसंकोच उसकी आलोचना का संवैधानिक अधिकार है। प्रत्येक भारतीय को नागरिक के रूप में सरकार की आलोचना का अधिकार है और इस प्रकार की आज़ादी राजद्रोह साबित नहीं हो सकती है।"



कई बार आतंकवादियों के लिए भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानवाधिकार की बात की जाती है लेकिन स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में फर्क होता है। मानवाधिकार एवं अभिव्यक्ति की आज़ादी भारतीय संविधान द्वारा संरक्षित है, पर संविधान की रक्षा कौन करता है? जिस संविधान के साया तले हमें आज़ादी का सुख प्राप्त होता है, लोग उसी संविधान की धजियाँ उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

भारतीय संविधान हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है, सच्चा लोकतंत्र भी बिना अभिव्यक्ति की आज़ादी के दो कदम टिक नहीं सकता, लेकिन आज़ादी का मतलब उड़ड़ता कतरई नहीं है। संविधान भी हमारी अभिव्यक्ति की आज़ादी को

कुछ मायनों में प्रतिबंधित करता है।

वो कुछ मायने इस प्रकार हैं –

1. भारत की संप्रभुता खतरे में नहीं पड़नी चाहिए
2. विदेशी पहल पर भारत की साख को धक्का नहीं पहुंचना चाहिए
3. भारत की एकता, अखंडता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए
4. न्यायालय की अवमानना न हो

गौरतलब यह है कि भारत में प्रेस की स्वतंत्रता संविधान में स्पष्ट रूप से प्रदत्त नहीं है वरन यह भी अनुच्छेद 19(1) द्वारा प्रदत्त अधिकार के छत्रछाया में फलीभूत है।

सुप्रीम कोर्ट ने विचार और अभिव्यक्ति के मूल अधिकार को 'लोकतंत्र के राजीनामे का मेहराब' कहा क्योंकि लोकतंत्र की नींव ही असहमति के साहस और सहमति के विवेक पर निर्भर है। लोकतंत्र एक आधुनिक उदारवादी विचारधारा है जिसके मूल आदर्शों के रूप में व्यक्ति की गरिमा का सम्मान, स्वतंत्रता, न्याय तथा शासन व्यवस्था आम जनता की सहमति पर आधारित हो, को शामिल किया जाता है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण भारत की लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के अंतर्गत शासन की शक्तियों का आजतक शांतिपूर्ण हस्तांतरण होता आया है, जिसने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बनाया एवं इसे स्थायित्व प्रदान किया।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सभी अधिकारों की जननी मानी जाती है। यह सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक मुद्दों पर जनमत तैयार करती है। मेनका गांधी बनाम भारत संघ मामले में न्यायमूर्ति ने वाक स्वतंत्रता पर बल प्रदान करते हुए कहा कि लोकतंत्र मुख्य रूप से बातचीत एवं बहस पर आधारित है तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश में सरकार की कार्यवाही के उपचार हेतु यही एक उचित व्यवस्था है।

अगर लोकतंत्र का मतलब लोगों का, लोगों के द्वारा शासन है तो स्पष्ट है कि हर नागरिक को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है और अपनी इच्छा अनुसार चुनने का वैधिक अधिकार भी है। संवाद के माध्यम से अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ एवं रूढ़ियों पर भी प्रहार किया गया है। मानव की तार्किक क्षमता, साहस तथा नवाचारी प्रवृत्ति को भी बढ़ावा मिला है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ने शासन-प्रशासन के विरुद्ध पनप रहे जनता के गुस्से से सरकार को अवगत करवाया है, जिससे अराजकता रुकती है एवं लोकतंत्र मजबूत होता है।



आतंकी समूहों द्वारा सोशल मीडिया का प्रयोग भर्तियों एवं आतंकी गतिविधियों के संचालन हेतु करना ऐसी समस्याएं हैं जिन्होंने न सिर्फ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को चुनौती दी है बल्कि सरकार द्वारा इससे निपटने का जरिया अत्यंत कठिन बना दिया है। वर्तमान युग में फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर (एक्स) ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यापक रूप प्रदान किया है, जहां हर मुद्दे पर लोगों द्वारा खुल कर अपनी राय रखी जाती है फिर चाहे मामला सरकार विरोधी हो, किसी खास क्षेत्र में चल रहे हिंसा विरोधी या किसी मजहब के देवी देवताओं के विरुद्ध। इस प्रकार की अभिव्यक्तियों में कुछ खास समूह अपना एजेंडा सेंक जाते हैं। इस प्रकार की अभिव्यक्ति की आजादी ने विशेष प्रकार की चिंता सरकार के समक्ष खड़ी कर दी है।

उदाहरणार्थ :- गौरी लंकेश, पत्रकार, हिन्दू अतिवाद की वजह से 2017 में इनकी हत्या हो गई। नेत्री नूपुर शर्मा, पैगंबर मुहम्मद पर टिप्पणी की वजह से सामूहिक बलात्कार तक की धमकी मिली। हालांकि इससे निपटने के सरकार ने नई आई टी अधिनियम लागू की है। अपितु धरातली स्तर पर अभी काफी कुछ करना अपेक्षित है।

अभिव्यक्ति की सीमा क्या हो, यह हमेशा विवाद का विषय रहा है। हाल ही में सम्पन्न हुए पेरिस ओलंपिक में फ्रांस द्वारा प्रदर्शित द लास्ट सप्पर (The last Supper) पर आधारित एक नाट्य के मंचन को आलोचकों की कड़ी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। परिणामस्वरूप ओलम्पिक कमेटी ने उसे अपने आधिकारिक चैनल से डिलिट कर दिया। इस घटना के कारण फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल को भी कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा। जावेद अख्तर ने इस घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए लिखा –

“नर्म अल्फाज़ भली बातें मोहज्जब लहसे,

पहली बारिश में ही ये रंग उतर गए...”

अभिव्यक्ति की आज़ादी की महत्ता कितनी है वह अटल बिहारी बाजपेयी की इन पंक्तियों से समझ सकते हैं:-

“बाद मुद्दत के मिले हैं दीवाने, कहने-सुनने को बहुत हैं अफ़साने,

खुली हवा में जरा साँस तो ले लें, कब तक रहेगी आज़ादी कौन जाने ?

लोकतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इनमें से किसी पर भी आंच आने पर दूसरा स्वतः ही विलुप्ति के कगार पर पहुँच जाता है, जो जनमत पर तानाशाही की स्थापना को बढ़ावा देता है। पत्रकारिता के संबंध में अधिकार एवं उत्तरदायित्व में संतुलन करना आवश्यक है। इसी प्रकार घृणा-संवाद एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मध्य अंतर को समझना भी बहुत जरूरी है। मजबूत लोकतंत्र हेतु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ उसकी सीमा का तय होना भी आवश्यक है। इन दोनों में पूरकता के संबंध को स्वीकार करते हुए बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि राष्ट्र लगातार प्रगति के रास्ते पर अग्रसर हो सके, समाज समावेशी बने एवं विश्व में भारतीय संविधान जो कि एक मिशाल है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु भी गरिमा बरकरार रहे।

डर से जागृति तक : एक नई सुबह

मैं जागूं एक डर के साथ, फिर दिन को कैसे बिताऊं,
खुद से बचने को, हज़ारों वाक्य दोहराऊं।
"बेटा, आज गाड़ी क्यों नहीं ले जा रहे?" माँ ने कहा,
मन में सोचा – "माँ, मेरी नसें सुन्न हैं, क्या कहूँ भला?"

मेरा आत्मविश्वास कहाँ खो गया, कहाँ हुआ सब गुम?

डर को हावी मत होने दो, तू तो है एक बम!

आखिरकार डर को मैंने किनारे कर दिया,

और अपनी घबराहट को सफर में संग ले जाने से मना कर दिया।

पर सुनो, ये बेचैनी भी रोज़ नई हदें पार करने लगी,
मुझसे ज़्यादा ये कहती है – "मैं नहीं तो कौन?" इतनी ज़िद्दी बन गई!
कहाँ गई वो निडर लड़की, जो इक्कीस की उम्र में थी बेहिसाब बेखौफ?
क्या बचपन के ज़ख्म लौट आए हैं, लेकर कोई नया रूप, कोई नया दौर?

क्या दुनिया की उम्मीदें अब इतनी भारी हो गई हैं,

कि सांस लेना भी मुश्किल, और हिम्मत सारी खो गई है?

"क्या आपने कभी 'फीडबैक लूप फ्रॉम हेल' के बारे में सुना है?"

जहाँ एक एहसास दूसरे को जन्म दे, और अपराधबोध के दलदल में धकेल दे?

गूगल से जवाब मांगने निकली, सच का आईना सामने था,
"जनरलाइज़्ड एंगज़ाइटी डिसऑर्डर," और दिल सहम गया।
क्या आपको याद है वेम्पायर डायरीज के वो किरदार,
जो बटन दबा कर कर देते थे भावनाओं से इनकार?

काश इंसान को भी ऐसा वरदान मिला होता,

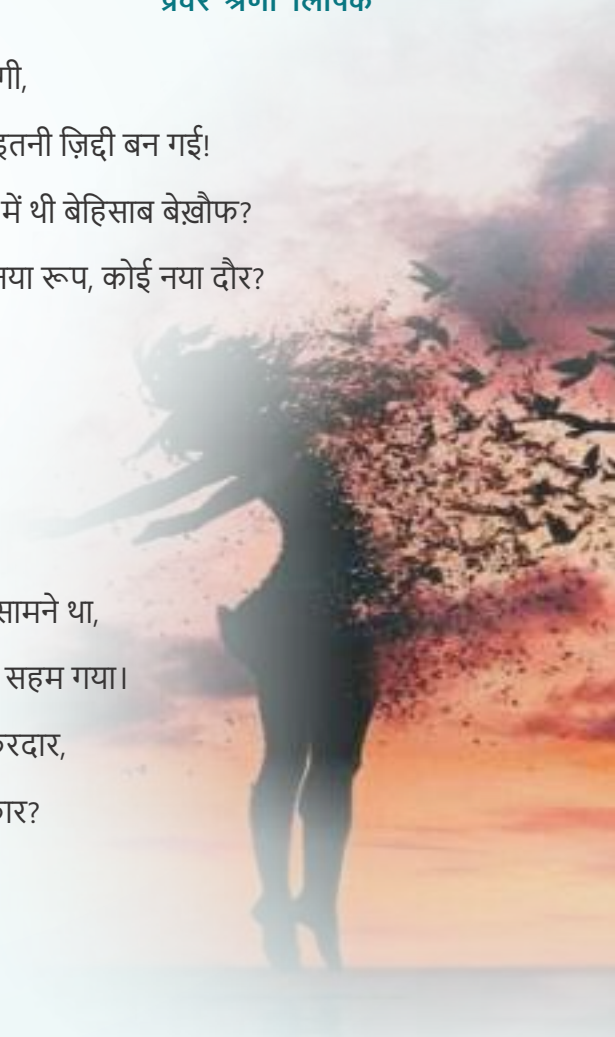
तो ये बेचैनी, ये हलचल, कभी न दिल का हिस्सा होता।

पर फिर मिला मुझे मार्कस ऑरेलियस का ज्ञान,

जिसने स्टोकिसिज्म सिखाकर किया डर का अवसान।



अमोलिना बैनर्जी
प्रवर श्रेणी लिपिक



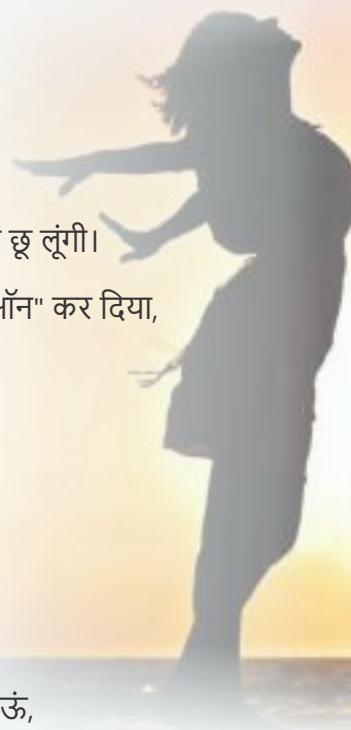
दिन-रात मैडिटेशंस पढ़ने में बिताए,
मन को सुकून तो मिला, पर यादें भी धुंधली हो जाएं?
हर बीते लम्हे का दर्द, हर अधूरी खुशी का भार,
कुछ और दिन ऐसे ही कटते, तो बन जाती मैं हार्टलैंड की केट ब्लैचैट यार!

पर यूं ही हाथ पर हाथ धरे नहीं रह सकती थी,
जब एहसास बुझ रहे थे, तो फिर क्या बचा था जीने में?
जब यादें ही राख बन रही थीं,
तो क्या था मेरे वजूद के सीने में?

तभी ठानी, फिर से अपने दिल को खोलूंगी,
इस बार दर्द को भी अपनाकर, जीवन को फिर से छू लूंगी।
डर को हराकर, एक लंबी सांस ली, और बटन "ऑन" कर दिया,
खुशी की लहर में नया जन्म पा लिया।

समझ आया, बिना जज़्बात इंसान बस एक मशीन है,
उत्साह और जुनून ही तो असली ताजगी की जमीन है।
कसम खाई, अब कभी अपने एहसासों को नहीं छोड़ूंगी,
चाहे दुनिया जो भी कहे, मैं अपने जज़्बातों संग ही चलूंगी।

मैं जागूं एक डर के साथ, फिर दिन को कैसे बिताऊं,
पर अब कोई ग्राउंडहॉग डे नहीं, हर सुबह को नया बनाऊं!



हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल
पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली
श्रेणी में समासीन हो सकती है
मैथिलीशरण गुप्त

कुछ रोचक तथ्य

1. बुद्धिमान व्यक्ति अपनी गलतियों से सीखता है, अधिक बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों के अनुभव से सीखता है।
2. विश्वास एक छोटा सा शब्द है जिसके मायने समझो तो बहुत है, पर मुश्किल ये है कि लोगों को विश्वास पर शक है और अपने शक पर विश्वास है।
3. इंसान इतना कमजोर है कि छोटी-छोटी चीजों से डर जाता है, और बहादुर इतना है कि भगवान से भी नहीं डरता।
4. जिंदगी में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है, पर जो रिश्ते हैं उनमें जिंदगी होना बहुत जरूरी है।
5. इंसान को उस वक्त तक कोई नहीं हरा सकता जब तक वो अपने आप से न हार जाए।
6. अगर लोग सिर्फ जरूरत पड़ने पर ही आपको याद करते हैं तो बुरा मत मानिए, गर्व महसूस कीजिए, क्योंकि आप वो उजाला हो जो तब याद आते हो जब उनकी जिंदगी में अंधेरा होता है।



सुशील थुल
सहायक

बोधप्रद तथापि वास्तविक

1. कुछ भी करते वक़्त झिझक ना रखें कि हार होगी, या तो जीत मिलती है या सीख।
2. अज्ञानी होना गलत बात नहीं है, परन्तु सीखने की लालसा न होना शर्म की बात है।
3. ऐसा भी अनुभव है कि जिस इंसान में बुराईयाँ नहीं होती, उनमें अच्छाईयाँ कम मात्रा में होती हैं।
4. आने वाला हर दिन जागने की दूसरी संधि है और आज वह कल है जिसका हम प्रतीक्षा कर रहे थे।
5. यदि आपकी आँखें सकारात्मकता रखती हैं, तो आप जगत पर प्रेम करते हैं और वाणी सकारात्मकता रखती है तो जगत से आपको प्रेम जरूर मिलेगा।
6. जीवन में यदि कोई पसंद आये तो, सिर्फ पसंद ही करें, प्रेम ना करें क्योंकि वह मिथ्या है, समाप्त होती है, परन्तु पसंद, चिरकाल होती है।



वैशाली गजभिye
सहायक

पेल ब्लू डॉट - पृथ्वी की सेल्फी

"गौर से देखिये उस बिंदु को। वो यहाँ है। वो हमारा घर है। वे हम हैं। हर कोई जिससे आप प्यार करते हैं। हर कोई जिससे आप प्यार करते हैं, हर कोई जिसे आप जानते हैं, हर कोई जिनके बारे में आपने कभी सुना है, हर इंसान जो अतीत में हुए हैं, वे यहीं रहे हैं। हमारी सारी खुशियाँ और गम, हजारों धर्म और मजहब, विचारधाराएँ और आर्थिक नीतियाँ, हर शिकारी और चारागर, हर हीरो और कायर, हर सभ्यता का निर्माता और विनाशक, हर राजा और किसान, हर एक प्रेमी जोड़ा, हर माँ और पिता, हर उम्मीद से भरा बच्चा, हर आविष्कारक और खोजी, नैतिकता का हर शिक्षक, हर भ्रष्ट नेता, हर सुपरस्टार और महान नेता, हर महात्मा और पापी, हमारी प्रजाति के इतिहास के सभी संत और पापी यहाँ ही रहे हैं -- सूर्य की किरण में लटके हुए इस एक छोटे धूल जैसे कण पर।"

- कार्ल सगन, पेल ब्लू डॉट, 1994

"पेलब्लू डॉट" के पीछे की कहानी!



ये कहानी है 14 फरवरी 1990 की। इस दिन जब लोग अपने प्रियजनों को फूल और उपहार भेज रहे थे, तब अमेरिका के स्पेस एजेंसी नासा के "वॉयेजर 1"

नामक अंतरिक्ष यान ने पृथ्वी का एक ऐतिहासिक 'पेल ब्लू डॉट' फोटो खींची। इस तस्वीर में पृथ्वी एक छोटे से बिंदु के रूप में दिखाई देती है, जो हमें यह याद दिलाती है कि हम सभी को प्रेम और देखभाल की आवश्यकता है।



तानिया भोंसले
प्रवर श्रेणी लिपिक

कार्ल सगन को इस फोटो या सेल्फी का श्रेय जाता है। वे एक प्रसिद्ध अमेरिकी वैज्ञानिक, खगोलशास्त्री, और लेखक थे और नासा की "वॉयेजर मिशन" टीम का हिस्सा थे। सागन के अनुरोध पर, नासा ने अपने "वॉयेजर 1" अंतरिक्ष यान को पृथ्वी पर अपना कैमरा घुमाने का आदेश दिया था। इससे पृथ्वी की एक बहुत छोटी छवि बनी। इसी छवि को "पेल ब्लू डॉट" के रूप में जाना गया। 1980 में, सागन ने 'कॉस्मोस: ए पर्सनल वॉयेज' सीरीज को सह-लिखा, जो पुरस्कार विजेता थी। यह सीरीज 10 सालों तक अमेरिकी सार्वजनिक टेलीविजन के इतिहास में सबसे ज्यादा देखी जाने वाली सीरीज बनी हुई थी। इस सीरीज में ब्रह्मांड की सामंजस्य को प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने जीवन की उत्पत्ति और पृथ्वी पर मनुष्यों की स्थिति का दृष्टिकोण सहित कई वैज्ञानिक विषयों को कवर किया था जिसे लोगो ने काफ़ी पसंद किया। यह प्रतिष्ठित "पेल ब्लू डॉट" फोटो इस "वॉयेजर 1" अंतरिक्ष

यान ने वैलेंटाइन डे पर, याने की 14 फरवरी 1990 को खींची थी। उस समय यह अंतरिक्ष यान पृथ्वी से लगभग 6.4 बिलियन किलोमीटर (40.5 ए.यू.) दूर था। 40.5 ए.यू. का अर्थ है जितना दूर सूर्य हमारी पृथ्वी से है उसके 40.5 गुणा दूर। वॉयेजर 1 ने वरुण (नेपच्यून) की कक्षा के पार से सौरमंडल के आठ ग्रहों में से छह के तस्वीरें लीं। जैसा की आप तस्वीर में देख सकते हैं, इसने शुक्र (वीनस), पृथ्वी, बृहस्पति (जुपिटर), शनि (सैटर्न), अरुण (युरेनस) और वरुण (नेपच्यून) को तस्वीरों में कैप्चर किया। कुछ महत्वपूर्ण ग्रह तस्वीरों में शामिल नहीं हो सके। बुध (मरक्युरी) सूर्य के बहुत पास था जो सूर्य की रोशनी की वजह से तस्वीर में कैद न हो सका। मंगल (मार्स) कैमरे में फैले हुए सूर्य के प्रकाश के कारण नहीं दिखा



और बौना ग्रह प्लूटो, जिसे उस समय ग्रह माना जाता था, बहुत छोटा और दूर था और बहुत अंधेरे के कारण उसे पहचान पाना संभव नहीं था। इसे "फैमिली पोर्ट्रेट" का नाम दिया गया।

वॉयेजर 1 ने इन सारी तस्वीरों को अपनी टेप रिकॉर्डर में संग्रहित किया। इसने पृथ्वी के रेडियो टेलीस्कोप्स के ज़रिये इन तस्वीरों को तीन महीनों के दौरान पिक्सल दर पिक्सल भेजा। इन तस्वीरों ने इंसानों को उनके ग्रह और उसके पड़ोसियों का अभूतपूर्व और रोमांचक दृश्य प्रदान किया।

अमेरिका के कार्ल सागन का दृष्टिकोण!

अब, आइए हम इस प्रतिष्ठित चित्र के गहरे अर्थों पर नजर डालें।

सागन ने अपनी किताब में इस फोटो का वर्णन करते हुए को लिखा था कि यह बिंदु हमारा घर है। यहाँ हर व्यक्ति, हर प्रेम कहानी, हर जीवन यहाँ मौजूद है। यह छोटा सा बिंदु हमें हमारी अस्थिरता और एकता की याद दिलाता है, जो ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में केवल एक धूल के कण के समान है। क्या होगा अगर हम भी पृथ्वी को ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में केवल एक छोटे से बिंदु के रूप में देखें—इसके बाद क्या हम इसे अलग नज़रिये से देखेंगे? "सागन ने अपनी किताब में यह भी लिखा था कि हमारी बनावट, हमारा काल्पनिक आत्म-महत्व, यह भ्रम कि हमारे पास ब्रह्मांड में कोई विशेष स्थान है, इस हल्के बिंदु द्वारा चुनौती दे गई है। 35 साल बाद, पृथ्वी और वॉयेजर यान दोनों ही बहुत कुछ बदल चुके हैं। वॉयेजर 1 अब पृथ्वी से 25 बिलियन किलोमीटर से भी ज्यादा दूर है - यह उस समय से चार गुना ज्यादा दूर है जहाँ से उसने वह तस्वीर खींची थी। यह अभी भी हमसे विज्ञान से संबंधित डेटा अंतरतारकीय अंतरिक्ष से भेज रहा है।

ब्रह्मांड विज्ञान पर अमेरिका के खगोल शास्त्री कार्ल सागन के विचार:-

ब्रह्मांड की चक्रीय प्रकृति: सागन ने यह ध्यान दिलाया कि हिंदू धर्म विशेष रूप से ब्रह्मांड को सृजन और विनाश के निरंतर चक्र में रखता है। यह आधुनिक ब्रह्मांडीय सिद्धांतों से मेल खाता है।

समय-मानक का सामंजस्य: उन्होंने यह भी बताया कि

हिंदू ब्रह्मांडविज्ञान ब्रह्मांड के लिए एक समय-मानक प्रदान करता है जो आधुनिक वैज्ञानिक अनुमान के अनुरूप है। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म के अनुसार ब्रह्मा का दिन और रात लगभग 8.4 अरब वर्षों तक चलना, पृथ्वी की उम्र लगभग 4.6 अरब वर्ष और ब्रह्मांड की उम्र जो 10 से 20 अरब वर्षों के बीच अनुमानित करना। ये सब वैज्ञानिक समझ से मेल खाते हैं।

उन्होंने भारतीय ब्रह्मांडविज्ञान के प्रति अपनी सराहना व्यक्त करते हुए कहा था: "हिंदू धर्म दुनिया के महान धर्मों में से एकमात्र धर्म है जो इस विचार को समर्पित है कि ब्रह्मांड स्वयं अनगिनत, वास्तव में, अनंत संख्या में मृत्यु और पुनर्जन्मों से गुजरता है।"

आध्यात्मिक संबंध: भगवद गीता से विचार !

जब पृथ्वी की वैज्ञानिक छवि इतनी अद्भुत है, तो यह गहरे दार्शनिक विचारों को भी उत्पन्न करती है। यह हमें इस छोटे से बिंदु के माध्यम से मानव चेतना और भगवद गीता की शिक्षाओं से जुड़ी गहरी समझ की ओर प्रेरित करती है। हमारे भगवद गीता के अनुसार, पृथ्वी को ब्रह्मांड की विशालता के मुकाबले बहुत छोटा माना जाता है, जिसमें यह वर्णित किया गया है कि ब्रह्मांड में अनगिनत ब्रह्मांड हैं, प्रत्येक ब्रह्मांड में अपनी-अपनी आकाशगंगाएँ और तारे हैं, जिससे हमारा ग्रह इन सबकी तुलना में महत्वहीन लगता है; हालाँकि, गीता यह भी कहती है कि इसके आकार के बावजूद, भीतर स्थित मानव आत्मा महान आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने की क्षमता रखती है और पृथ्वी पर हमारे कर्मों का महत्व है, चाहे इसका ब्रह्मांडीय पैमाना कितना भी छोटा क्यों न हो।

कर्मों से जुड़ी गीता में लिखी कुछ बातें भी पढ़ें जिससे

आपकी मदद हो सकती है:-

1. सोच अच्छी रखो तो लोग अपने आप अच्छे लगने लगेंगे। नियत अच्छी रखो तो काम अपने आप ठीक होने लगेंगे।
2. जीवन के ये तीन मंत्र हर किसी को याद रखने चाहिए। आनंद में किसी को वचन मत दीजिये, क्रोध में उत्तर मत दीजिये और दुःख में कोई निर्णय मत लीजिए।
3. हर व्यक्ति अपने कर्मों और चुनावों के लिए जिम्मेदार है, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न लगें।
4. किसी कर्म के पीछे की भावना उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कर्म स्वयं है।
5. हमारा भाग्य हमारे ही अतीत के कर्मों का फल है। उसी तरह हम आज जो कर्म कर रहे हैं वो हमारे आने वाले कल को निर्धारित करेंगे।



गीता के ब्रह्मांड संबंधित प्रमुख बातें:-

1. **ब्रह्मांडीय पैमाना:** गीता ब्रह्मांड का वर्णन एक विशाल और जटिल प्रणाली के रूप में करती है, जिसमें विष्णु (पालक देवता) के शरीर में कई ब्रह्मांड विद्यमान हैं।
2. **मानव महत्व:** पृथ्वी छोटी हो सकती है लेकिन गीता यह रेखांकित करती है कि मानव जीवन

आध्यात्मिक विकास और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति के लिए एक मंच के रूप में महत्वपूर्ण है।

3. **दैवीय उपस्थिति:** भगवान (कृष्ण) की अवधारणा ब्रह्मांड के पूरे क्षेत्र में व्याप्त मानी जाती है, इसका अर्थ है कि पृथ्वी जैसे छोटे ग्रह पर भी दिव्य अनुभव किया जा सकता है।

पृथ्वी से प्रेम: हम क्या कदम उठा सकते हैं!

जैसे हम खुद से और अपने आस-पास के लोगों से प्रेम करते हैं, वैसे ही हमें इस प्रेम को पृथ्वी तक भी बढ़ाना चाहिए।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह वाक्य भारतीय संतों और विचारकों ने दिया था, जिनमें महर्षि वेदव्यास और महोपनिषद के विद्वान प्रमुख हैं। यह मेरा रिश्तेदार है और वह नहीं है - यह संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों की सोच है। लेकिन उच्च मानसिकता वाले लोगों के लिए सम्पूर्ण ब्रह्मांड और पृथ्वी पर सभी प्राणी एक ही परिवार के समान हैं।

संक्षेप में इसका अर्थ है -

धरती ही परिवार है (वसुधा एव कुटुम्बकम्)।

हमें अपनी पृथ्वी का ध्यान और रक्षा उसी समर्पण और स्नेह के साथ करनी चाहिए जैसे हम अपने प्रियजनों का करते हैं। इन आसान कर्मों से हमारे एक मात्र घर से प्यार व्यक्त करें:-

1. पेड़ पौधे लगाएं। पेड़ पौधे वातावरण से हानिकारक कार्बन को अवशोषित करने में मदद करते हैं। पेड़ पौधों के बीच समय बिताने

से तनाव और चिंता कम होती है। डिप्रेशन से बचने में मदद होती है और मूड में सुधार होता है।

2. आर्गेनिक खाद बनाने की शुरुआत करें। खाद बनाना मिट्टी को उपजाऊ और समृद्ध करने का एक शानदार तरीका है। आर्गेनिक खाद बनाने के लिए मुख्य रूप से सब्जियों और फलों के छिलके, इस्तेमाल की गई कॉफ़ी के अवशेष, इस्तेमाल की गई चाय पत्तियाँ या अंडे के छिलके का उपयोग करें क्योंकि ये आसानी से मिट्टी को पोषक तत्व प्रदान करते हैं।
3. अधिक और बेहतर तरीके से पुनर्नवीकरण याने की रीसायकल करें। पुनर्नवीकरण अपशिष्ट या वेस्टेज को कम करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। कपड़े, कागज या फर्नीचर को रीसायकल करने का प्रयास करें। क्या आप जानते हैं कि कपड़े को रीसायकल करनेवाली कम्पनीज़ जैसे की H&M stores किसी भी स्थिति के कपड़े या ब्रांड के बावजूद सभी कपड़ों को स्वीकार करते हैं?
4. प्लास्टिक का उपयोग कम या ना के बराबर करें। प्लास्टिक ग्रोसरी बैग, पानी की प्लास्टिक बोतलें या कटलरी का उपयोग करने से बचें। प्लास्टिक प्रदूषण से जुड़ा है; क्योंकि यह आसानी से बायोडिग्रेड नहीं होता। इसकी जगह स्टेनलेस स्टील की बोतलें, पेपर कटलरी या पेपर या कपड़े की बैग का इस्तेमाल करें।
5. पानी का उपयोग कम करें और उसे बर्बाद या

- वेस्ट ना करे। समय पर नल को बंद करना, छोटे शावर लेना, या कम-फ्लो शॉवरहेड लगाना बहुत मात्रा में पानी बचा सकते हैं।
6. अपने घर को और अधिक पर्यावरण-अनुकूल बनाने के लिए कदम उठाएं, जैसे कि अपनी सभी पारंपरिक लाइट बल्बों या ट्यूबलाइट्स को एलईडी बल्बों या ट्यूबलाइट्स से बदलना। जैसे कमरा छोड़ते समय लाइट्स बंद करना और एनर्जी स्टार उपकरण स्थापित करना।
 7. आप जहां काम करते हैं वहाँ भी ज़रूरत खत्म होने पर मशीनों को बंद करें। प्रिंटर मशीन, स्कैनर मशीन, फैन, एसी, और लाइट को बंद करना यह अनावश्यक बिजली उपयोग को रोकता है और बिजली की खपत को कम करके आपके कार्बन फुटप्रिंट को घटाते हैं। यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सतत भविष्य में योगदान करना ही है। अपने लिए ना सही लेकिन अपने बच्चों को ध्यान में रखके ज़रूरत ना पड़ने पर मशीने बंद कर दें और अपने बच्चों

और आस पास के लोगों को भी इसकी आदत और एहमियत सिखायें।

8. अपनी स्क्रीन देखने के समय को निकालकर बाहर प्रकृति कि साथ समय बिताने का प्रयास करें। बाहर का वातावरण जहां पेड़ पौधे, पहाड़, नदी, झरना, तालाब या समुंदर वहाँ जाएँ और उसे स्वच्छ रख के प्रकृति का आनंद लें!

जब हम वैलेंटाइन डे पर प्रेम का उत्सव मना सकते है, तो आइए उस प्रेम को केवल एक-दूसरे तक ही सीमित न रखें, बल्कि पृथ्वी के प्रति भी फैलाएं। एक दूसरे को ऐसे गिफ्ट्स दे जिससे पृथ्वी को भी प्यार मिल सके। यह घर एकता और करुणा का प्रतीक है। हमारे छोटे से ग्रह का भविष्य हमारे हाथों में है, और यह हमारी साझी जिम्मेदारी है कि हम यह सुनिश्चित करें कि पृथ्वी, हमारा पेल ब्लू डॉट और एक मात्र घर, आने वाली पीढ़ियों की लिए जीवित और समृद्ध बना रहे।



देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है।

सुभाष चंद्र बोस

क.रा.बी. निगम में सेवा से जुड़ी मेरी यादें

प्रिय एसिक मित्रों!

इस लेख को लिखते समय, मैं बहुत भावुक हो रही हूँ। निश्चित ही कार्यालय की इस पत्रिका में, सेवाकाल का मेरा यह अंतिम लेख है क्योंकि मैं माह अक्टूबर 2024 में सेवानिवृत्त हो गई हूँ। मैंने अपने जीवन के 40 वर्ष ईएसआईसी की छत के नीचे बिताए हैं। आज भी वह पहला दिन याद है, जब मैंने 8 अक्टूबर 1984 के दिन अवर श्रेणी लिपिक के रूप में कर्मचारी राज्य बीमा निगम की सेवा आरंभ की थी।

अपने छात्र जीवन के बाद, जब मैंने कार्यालयी जीवन की शुरुआत की तो मुझे एक नया वातावरण प्राप्त हुआ। कार्यालय के वरिष्ठों के स्नेह और सहयोग से, मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। पूर्व सहकर्मियों की याद तो हमेशा ही आती रही है। मैंने उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के विविध शाखा कार्यालयों में कार्य किया जिसमें शाखा कार्यालय मॉडल मिल, शाखा कार्यालय, जुम्मा तालाब (अब बंद हो चुका है) तथा शाखा कार्यालय, हिंणणा रोड में अधिक समय बिताया।

नागपुर के बाद कुछ समय उप क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद में भी कार्य करने का अवसर मिला। वर्ष 2009 में, मुझे 2 साल के लिए वहां स्थानांतरित किया गया था। बाद में, पुनः उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर में वापसी हुई और फिर एक नई पारी की शुरुआत हुई। मई, 2019 में मेरी तैनाती विधि शाखा में सामाजिक सुरक्षा अधिकारी (विधि) के पद पर की गई। इस क्षेत्र में मेरी कोई रुचि नहीं थी लेकिन इस कार्यदायित्व और कार्य की गंभीरता ने मुझे

आकर्षित किया।

पुलिस और अदालत के मामले पर जहाँ एक तरफ आम आदमी घबराहट से भर जाता है तो वहीं पर दूसरी तरफ मेरी जैसी एक सामान्य महिला जो कानूनी गलियारों से अपरिचित



अनुमति सिन्नरकर
सेवानिवृत्त सा.सु. अधिकारी

थी उसके लिए यह कार्य मुझे मेरे कार्यक्षेत्र में एक चुनौती सदृश्य जान पड़ा इसलिए मैंने इसमें व्यक्तिगत रुचि ली। इसके बाद का अनुभव बहुत महत्वपूर्ण रहा, विधिक दस्तावेजों का प्रारूपण, कार्यवाहियों का अध्ययन, अधिवक्ताओं से चर्चा, मामलों की पैरवी और अदालत की प्रणालियों को नजदीक से देखने-समझने का सुअवसर मिला इससे मेरे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और काम के निपटान में तेजी भी आई।

ईएसआईसी की सेवा आरंभ करने के पूर्व मेरा खेल जगत से काफी लगाव था। मुझे लगातार एथलेटिक्स खेल में 2 साल बेस्ट एथलीट का नागपुर विद्यापीठ से अवार्ड मिला था। ईएसआईसी की सेवा में आने के बाद, अपने खेल प्रतिभा के बल पर मैंने उसे क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर की ओर से खेलते हुए ऑल इंडिया एसिक खेलों में कई बार पुरस्कार जीते।

कार्यालय में काम करते हुए, मैंने बहुत से अनुभव अर्जित किये। कर्मचारी संघ की गतिविधियों में

भी सक्रियता के साथ जुड़ी रही और कर्मचारी संघ के अलग-अलग पदों के लिए निर्वाचित होकर कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व किया। महिला सहकर्मियों के मामलों को प्रखरता के साथ उठाया और समाधान किया। कार्यालय के मनोविनोद कक्ष के सचिव पद की जिम्मेदारी संभालते हुए, निभाए गए कार्यों का स्मरण मन को अभिभूत कर देता है। स्मरण आता है कि नागपुर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक दंपति डॉ. रवींद्र कोल्हे एवं डॉ. स्मिता ताई कोल्हे जो कि सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं उन्हें सोशल गैदरिंग के दिन आमंत्रित करने का सौभाग्य मिला। ऐसे परोपकारी व्यक्तित्व के धनी विभूतियों को अपने बीच पाकर कर्मचारी हर्ष से झूम उठे।

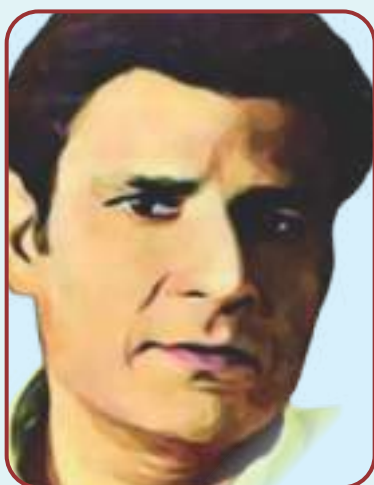
सरकारी सेवा से जब आर्थिक संबल मिला तो सामाजिक कार्यों के प्रति भी उत्साह का संचार हुआ। इसी

क्रम में, मैं कई सामाजिक गतिविधियों से जुड़ गई। मैं दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्र मेलघाट गई और वहाँ के लोगों की जीवन शैली को नजदीक से देखा तथा उन्हें दैनिक उपभोग की वस्तुएं भेंट की। हर वर्ष अक्टूबर माह में मेलघाट हेतु दान महोत्सव हमारे द्वारा किया जाता है।

चार दशकों का जीवन मात्र इतना ही नहीं होता। कहने और लिखने को बहुत कुछ शेष है, ईएसआईसी में रहकर मुझे अच्छे अधिकारियों और सहकर्मियों का साथ मिला। आने वाले जीवन में इस 40 वर्ष की यात्रा का चलचित्र आँखों के सामने हमेशा फिरता रहेगा। मैं निगम की ऋणी हूँ जिसने हमेशा मेरा और मेरे परिवार का पालन किया और बीमितों की सेवा करने का अवसर भी प्रदान किया। मैं अपने सेवाकाल से पूर्णतया संतुष्ट हूँ।

धन्यवाद ईएसआईसी! धन्यवाद दोस्तों!

हो गई है पीर पर्वत



दुष्यंत कुमार

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए ।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए ।
हर सड़क पर, हर गली में हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए ।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए ।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए ।

यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:

नारी ईश्वर की अनुपम कृति है, उसके कोख से ही इस मानव जीवन का प्रादुर्भाव होता है, वह जन्मदात्री है। नारी को गृह लक्ष्मी मानकर समाज का स्तम्भ माना गया है। वह शक्ति है, अन्नपूर्णा है, रिद्धि-सिद्धि, काली भी है। वह प्रेम, त्याग, शान्ति, क्षमा, दया, समर्पण, ममता की साक्षात् प्रतिमा है। वह धरा की तरह धैर्यशील और समय पड़ने पर प्रचण्ड चण्डी का भी रूप धारण कर लेती है। त्याग और बलिदान करने में कभी पीछे नहीं हटती है। यहाँ तक कि समय पड़ने पर अपने अस्तित्व, पहचान की भी परवाह नहीं करती है। तभी किसी ने कहा भी है कि पुरुष पाकर भूल जाता है और स्त्री देकर भूल जाती है। वह अपने आदर्शों, संस्कारों से सदैव गृहस्थाश्रम का सम्पूर्ण भार उठाती है। पुरुष के जीवन रूपी नौका की जिम्मेदारी होती है और वह पूरी निष्ठा, ईमानदारी से नौका को आंधी, तूफानों का सामना करते हुए पार करती है।

एक दौर था जब धर्म, रीति-रिवाज, मान-मर्यादा के नाम पर स्त्रियों का शोषण किया जाता था। तिरस्कार, अत्याचार एवं उपेक्षित किया जाता था। उन्हें केवल भोग की 'वस्तु' मानकर प्रताड़ित किया जाता था। बाल विवाह, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, पर्दा प्रथा, शिक्षा का अभाव, नारी को पुरुषों की अपेक्षा निम्न एवं कमजोर समझा जाना आदि सामाजिक कुरीतियाँ नारी को जागृत होने से हमेशा रोकती आईं। उस पर अत्याचार होते रहे और वह चुपचाप पशु की तरह सहन करती रहीं, उन्हें सामान्य अधिकारों से भी वंचित रखा गया।

समाज की विचारधाराओं में हमेशा बदलाव होते

रहे हैं। तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद आज स्त्रियों की स्थिति थोड़ी अच्छी हुई है। विकास के हर क्षेत्र में स्त्रियाँ आज पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर अपनी सहभागिता दर्ज कर रही हैं। देश के शीर्ष पदों पर भी आज महिलाएं आसीन हैं।



जम्बेश्वरी वैष्णव
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

हालांकि स्थिति में कुछ बदलाव जरूर हुआ है परंतु यह एक चिंताजनक विषय है कि इन तमाम परिवर्तनों के बावजूद इस परिवेश में कहीं न कहीं, किसी न किसी कोने में आज भी वे चेहरे मौजूद हैं जो समाज की इस विकास धारा को निरंतर पीछे खींच रहे हैं। समाज का एक विभत्स रूप पेश कर रहे हैं जहां देश की राजधानी एवं महानगरों में भी स्त्रियों अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं करतीं।

नारी के बिना इस संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी भी समाज या देश का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उसके नागरिक शिक्षित, जागरूक एवं प्रगतिशील होंगे। जब तक समाज में नारी को पुरुष के समान अधिकार नहीं मिलेगा समाज अपाहिज बना रहेगा क्योंकि महिलाओं की सहभागिता को नजरअंदाज कर किसी भी समाज का उत्थान संभव नहीं है।

प्रसन्नता का कोई मार्ग नहीं है, प्रसन्नता ही मार्ग है

“प्रसन्नता तब होती है जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सब एक साथ हों।”

-महात्मा गांधी

प्रसन्नता का अर्थ केवल किसी विशेष उपलब्धि या स्थिति तक पहुँचने में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षण में आनंद और संतोष का अनुभव करना है। यह विचार हमें यह सिखाता है कि प्रसन्नता कोई गंतव्य नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि यह एक जीवनशैली है।

प्रसन्नता को अक्सर बाहरी कारकों, जैसे संपत्ति, सफलता और प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है। यह धारणा है कि जब हम इन चीजों को प्राप्त कर लेंगे, तभी हमें प्रसन्नता मिलेगी। किंतु यह विचार वास्तविकता से बहुत दूर है। प्रसन्नता बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक स्थिति है। यह हमारे मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, न कि भौतिक उपलब्धियों पर।

महात्मा गांधी और बुद्ध जैसे महान विचारकों ने भी प्रसन्नता के आंतरिक स्रोत पर बल दिया है। उन्होंने यह सिखाया कि वास्तविक प्रसन्नता केवल तब मिल सकती है जब हम अपने भीतर शांति और संतोष प्राप्त करें।

वर्तमान युग में, जहाँ लोग धन, शक्ति और प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में लगे हुए हैं, प्रसन्नता की खोज और भी जटिल हो गई है। लोग सोचते हैं कि यदि वे अधिक धन अर्जित करेंगे, अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, तो वह प्रसन्नता को प्राप्त कर सकेंगे। यद्यपि यह मानसिकता उन्हें निरंतर असंतोष और तनाव की स्थिति में धकेलती है।

भारत जैसे विकासशील देश में भी, जहाँ आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ मूल रूप से अभी भी विद्यमान हैं, प्रसन्नता की यह खोज महत्वपूर्ण हो जाती है। आज, जहाँ लोग आर्थिक सुरक्षा के लिये संघर्ष कर रहे हैं, वहीं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे भी एक प्रमुख समस्या के रूप में उभरे हैं। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार, भारत का स्थान प्रसन्नता के स्तर में बहुत पीछे है, जो यह दर्शाता है कि हमें प्रसन्नता को समझने और उसे अपने जीवन में शामिल करने की आवश्यकता है।

मनोविज्ञान में, प्रसन्नता को "सकारात्मक मनोविज्ञान" के दृष्टिकोण से देखा जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मार्टिन सेलिगमन ने "सकारात्मक मनोविज्ञान" के सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने बताया कि प्रसन्नता जीवन के तीन महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित है: आनंद, संलग्नता और अर्थपूर्ण जीवन।

- आनंद: जब हम छोटे-छोटे पलों में खुशी पाते हैं।
- संलग्नता: जब हम अपने काम और रिश्तों में पूर्ण रूप से शामिल होते हैं।
- अर्थपूर्ण जीवन: जब हम अपने जीवन को एक उद्देश्य और दिशा देते हैं।



आशुतोष कुमार
आशुलिपिक

यदि हम इन तीन तत्वों पर ध्यान दें, तो हम प्रसन्नता को एक मार्ग के रूप में अपना सकते हैं और इसे केवल एक लक्ष्य के रूप में देखने से बच सकते हैं।

भारत की प्राचीन परंपराएँ, विशेष रूप से योग और ध्यान, प्रसन्नता को जीवन का अभिन्न हिस्सा मानती हैं। योग के सिद्धांतों में बताया गया है कि वास्तविक प्रसन्नता तब मिलती है जब हम अपने मन और शरीर के बीच संतुलन बनाए रखते हैं।

योग एवं ध्यान मानसिक शांति और आंतरिक प्रसन्नता के साधन हैं। ये हमें बाह्य जगत के तनावों और चिंताओं से ऊपर उठने में मदद करते हैं तथा हमें यह सिखाते हैं कि प्रसन्नता एक आंतरिक विषय है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से भारत ने विश्व भर में प्रसन्नता और मानसिक शांति की इस परंपरा को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय दर्शन में प्रसन्नता को मोक्ष, यानी आत्मा की मुक्ति के रूप में देखा जाता है। यह जीवन के चक्र से मुक्त होने की स्थिति है, जहाँ व्यक्ति पूर्ण शांति और आनंद की प्राप्ति करता है। भगवद गीता में, श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सिखाया कि निष्काम कर्म योग द्वारा व्यक्ति वास्तविक प्रसन्नता और शांति प्राप्त कर सकता है।

गीता के अनुसार, जब व्यक्ति अपने कर्मों को फल की अपेक्षा के बिना करता है, तब उसे वास्तविक प्रसन्नता मिलती है। यह विचार आधुनिक समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ लोग अपने कार्यों के परिणामों को लेकर चिंतित रहते हैं और इससे मानसिक तनाव का सामना करते हैं।

प्रसन्नता केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक और सामाजिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। एक समाज, जहाँ लोग संतुलन और प्रसन्नता के साथ जीवन जीते हैं, वह समाज स्थिर तथा समृद्ध होता है।

भारत जैसे विविधता वाले देश में, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियाँ, धर्म और जातियाँ एक साथ रहती हैं, सामाजिक संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। प्रसन्नता केवल तभी संभव है जब समाज में समानता, न्याय और आपसी सम्मान की भावना हो। भारत की सामाजिक नीतियाँ, जैसे "सबका साथ, सबका विकास," इस दिशा में प्रयास कर रही हैं कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और संसाधन प्राप्त हों, जिससे उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक प्रसन्नता अक्षुण्ण रहे।

प्रसन्नता का प्रत्यक्ष संबंध शासन और नीति निर्माण से भी है। यदि सरकारें जनहितैषी नीतियाँ बनाती हैं और सामाजिक न्याय, समानता तथा अवसरों की उपलब्धता को प्राथमिकता देती हैं, तो समाज में प्रसन्नता का स्तर बढ़ता है।

भूटान का उदाहरण यहाँ प्रासंगिक है, जहाँ "ग्रॉस नेशनल हैपीनेस" (GNH) को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से अधिक महत्व दिया जाता है। भूटान ने यह आदर्श प्रस्तुत किया है कि आर्थिक विकास केवल एक साधन है, न कि अंतिम लक्ष्य। सरकारें अगर प्रसन्नता पर केंद्रित नीतियाँ बनाएँ, तो इससे समाज के प्रत्येक वर्ग का उत्थान हो सकता है।

"प्रसन्नता का कोई मार्ग नहीं है, प्रसन्नता ही मार्ग है" यह कथन हमें सिखाता है कि हमें प्रसन्नता को एक गंतव्य के रूप में देखने की बजाय उसे जीवन की एक सतत् प्रक्रिया के रूप में अपनाना चाहिये।

प्रसन्नता का अर्थ केवल भौतिक उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक शांति, संतोष और जीवन के प्रति सकारात्मक

दृष्टिकोण में है। व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर प्रसन्नता की खोज और उसकी प्राप्ति से ही एक स्वस्थ और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है।

भारत जैसे देश में, जहाँ आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ व्याप्त हैं, प्रसन्नता पर ध्यान केंद्रित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार, समाज और व्यक्ति सभी को मिलकर प्रसन्नता की दिशा में कार्य करना चाहिये, ताकि हर नागरिक मानसिक शांति तथा संतोष का अनुभव कर सके।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रसन्नता केवल एक लक्ष्य नहीं है जिसे प्राप्त किया जा सके, बल्कि यह एक सतत यात्रा है, जिसे हर व्यक्ति को अपनाना चाहिये। जीवन का प्रत्येक क्षण प्रसन्नता का स्रोत हो सकता है, बशर्ते हम उसके प्रति समुचित दृष्टिकोण अपनाएँ।

"खुशी कोई पहले से बनाई हुई चीज़ नहीं है। यह आपके अपने कार्यों से आती है।"

दलाई लामा

रोज वेगळे प्रश्न (रोज अलग-अलग सवाल)

मराठी (मूल)

रोज वेगळे प्रश्न समोर येतात, पण आज आपल्याला उत्तर कसं शोधावं हे समजत नाही. एकाच कटकटीत, त्याच लहान मोठ्या विचारांत, आणखी एक चुक कधी न होईल या आशेने जगतो.

रोज वेगळे प्रश्न समोर येतात, आणि त्यांची उत्तरं मनाच्या गाभ्यात हरवली जातात. उठ, झोप, खा, बसा, आणि विचार कर, पण माणूस समजतोय का या सर्व विचारांना?

रोज वेगळे प्रश्न समोर येतात, आणि त्या प्रश्नांना सोडवायला, माझ्या मनाचा आवाज एकतरी ऐका, आणि त्यातच समाधान शोधा.

हिंदी (अनुवाद)

रोज अलग-अलग सवाल सामने आते हैं, लेकिन आज हमें यह समझ में नहीं आता कि उत्तर कैसे ढूँढ़ें। एक ही परेशानी में, उन्हीं छोटे-बड़े विचारों में, हम उम्मीद करते हैं कि कोई और गलती न हो।

रोज अलग-अलग सवाल सामने आते हैं, और उनके उत्तर मन के गहरे में खो जाते हैं। उठो, सोचो, खाओ, बैठो, और सोचो, लेकिन क्या इंसान इन सभी विचारों को समझ पा रहा है?

रोज अलग-अलग सवाल सामने आते हैं, और उन सवालों को सुलझाने के लिए, मेरे मन की आवाज़ को एक बार सुनो, और उसमें ही संतोष ढूँढ़ो।

संतोष चव्हाण

निकिता क्षिरसागर
प्रवर श्रेणी लिपिक

सुंदर नात्यावर (सुंदर रिश्ते)

मराठी (मूल)

मैत्री एक सोपी व्याख्या आहे..
'रोज आठवण यावी असं काही नाही,
रोज भेट व्हावी असं काही नाही,
एवढंच कशाला रोज बोलणं व्हावं असंही काहीच नाही;
पण मी तुला विसरणार नाही ही झाली खात्री आणि
तुला याची जाणीव असणं ही झाली मैत्री.'
शेवटी काय हो भेटी नाही झाल्या तरी गाठी बसणं महत्त्वाचं.
ज्यांनी हे जाणलं त्यांनी माणसातलं माणूसपण जाणलं..
अशा सगळ्या मित्रांना माझ्या शुभेच्छा.
ही नाती टिकवा आणि आयुष्याचा आनंद घ्या...

- पु.ल. देशपांडे

हिंदी (अनुवाद)

दोस्ती एक आसान परिभाषा है..
'हर रोज़ याद आने जैसा कुछ नहीं,
हर रोज़ मिलने जैसा कुछ नहीं,
इतना ही नहीं हर रोज़ बात करने जैसा भी कुछ नहीं;
लेकिन मैं तुझे भूलने वाला नहीं हूँ,
यह विश्वास होना और तुझे इसका एहसास होना ही दोस्ती है।'
आखिरकार, क्या फर्क पड़ता है अगर मुलाकातें नहीं हुईं,
लेकिन रिश्ते मजबूत होना जरूरी है।
जिन्होंने यह समझा, उन्होंने इंसानियत को समझा..
ऐसे सभी दोस्तों को मेरी शुभकामनाएं।
इस रिश्ते को निभाओ और जीवन का आनंद लो...



आयुष्य इतकं धावपळीचं (जीवन इतना दौड़ - धूप)

मराठी (मूल)

माणसांनी आपलं आयुष्य इतकं धावपळीचं, दगदगीचं आणि
अत्यंत वरवरचं करून घेतलं आहे। ही माणसं अशीच. यांना साय
हवी, दूध तापवण्याचा खटाटोप नको। सुगंध हवा, पण रोपट्याची
मशागत नको। मुलं हवीत, पण संगोपनाची यातायात नको।
गती हवी, पण प्रगती नको। प्रसिद्धी हवी, सिद्धी नको। ही माणसं
आयुष्य काढतात, जगत नाहीत। चालणारा माणूसच फक्त
पायाखाली कीडामुंगीची हत्या होत नाही ना हे बघतो। धावणारा
माणूस फक्त तुडवण्याचं काम करीत धावतो।

- वी.पी.काले

हिंदी (अनुवाद)

मानवों ने अपना जीवन इतना दौड़-धूप, भाग-दौड़ और बहुत ही
ऊपरी बना लिया है। ये लोग ऐसे ही हैं। इन्हें आराम चाहिए, दूध
उबालने की मेहनत नहीं। इन्हें खुशबू चाहिए, लेकिन पौधे की
देखभाल नहीं। बच्चों की चाहत है, लेकिन पालन-पोषण की
मुसीबत नहीं। गति चाहिए, लेकिन प्रगति नहीं। प्रसिद्धि चाहिए,
सिद्धि नहीं। ये लोग जीवन बिताते हैं, जीते नहीं। चलने वाला व्यक्ति
सिर्फ यह देखता है कि उसके कदमों के नीचे कोई जीव जन्तु मारा
तो नहीं गया। दौड़ने वाला व्यक्ति केवल दौड़ते हुए हर चीज़ को
रौंधते हुए जाता है।

तानिया भोंसुले
प्रवर श्रेणी लिपिक

नेहमीच नसतं अचूक कुणी (हमेशा सही नहीं होता कोई)

मराठी (मूल)

नेहमीच नसतं अचूक कुणी
नेहमीच नसतं अचूक कुणी
घड्याळ देखील चुकतं राव
जिंकलो जिंकलो म्हणता म्हणता
निसटुन जातो हातुन डाव
पडत जातात उलटे फासे
घरासोबत फिरतात वासे
आधाराचे हातही मग
होत जातात दिसेनासे
अशा वेळी मोडु नये
धीर कधी सोडु नये
नशीबाच्या नावानेही
उगाच गळा काढू नये
जेव्हा फोल ठरतात दावे
कळत नाही कुठे जावे
सगळी दारं मिटतात तेव्हा
आपणच आपला मित्र व्हावे
मग अचूक दिसते वाट
बुडण्या आधी मिळतो काठ
हसत हसत झेलता येते
खडक होवून प्रत्येक लाट
म्हणून म्हणतो फक्त एकदा
केवळ इतकं जमवुन पहा
मित्र सखा जिवलग यार
स्वतःतच शोधून पहा

हिंदी (अनुवाद)

हमेशा सही नहीं होता कोई
घड़ी भी कभी चूकती है, राव,
जितने का दावा करते करते,
हाथ से निकल जाता है दाव
गिरते जाते हैं उल्टे पासे,
घर के साथ घूमते हैं साये,
आधार के हाथ भी फिर,
नजरो से ओझल हो जाते हैं।
ऐसे वक्त में टूटना नहीं चाहिए
धैर्य कभी छोड़ना नहीं चाहिए
किस्मत के नाम पर भी,
बेवजह शिकायत नहीं करनी चाहिए।
जब सभी दावे असफल हो जाते हैं,
समझ नहीं आता कहां जाना चाहिए,
जब सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं,
तब हमें खुद को ही अपना साथी बनाना चाहिए।
तब रास्ता साफ दिखाई देने लगता है,
डूबने से पहले किनारा मिल जाता है,
हंसते हंसते हर लहर को सहा जा सकता है,
चट्टान बनकर हर चुनौती का सामना किया जा सकता है।
इसलिए मैं बस एक बात कहता हूँ,
सिर्फ इतना ही प्रयास करके देखो,
मित्र, सखा, जीवन का यार,
खुद में ही उसे खोजकर देखो।



- गुरु ठाकुर

निकिता क्षिरसागर
प्रवर श्रेणी लिपिक

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

राजभाषा पखवाड़ा 2024 का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में दिनांक 14 से 29 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन बड़े धूम-धाम से किया गया। दिनांक 16.09.2024 को पखवाड़े का शुभारंभ करते हुए राजभाषा हीरक जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता उप निदेशक (प्रभारी) श्री विशद वि. वाकपांजर ने की। इस दौरान श्री नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक, श्री मनोज कुमार यादव, सहायक निदेशक, श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक, श्री हेमंत बरडे, सहायक निदेशक सहित कार्यालय के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे। समारोह का संचालन श्री बृजेश कुमार सुमन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने किया। कार्यालय प्रमुख ने सभी कर्मिकों को राजभाषा-प्रतिज्ञा दिलाई। वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने एर्णाकुलम एवं दिल्ली में आयोजित हुए राजभाषा सम्मेलन की कार्यवाहियों की संक्षिप्त जानकारी दी। राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन की रूपरेखा से अवगत कराया गया। समारोह में हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री महोदय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया गया। उपस्थित अधिकारियों ने हिंदी दिवस के कई ऐतिहासिक तथ्यों का जिक्र करते हुए अपने विचार रखे। कार्यालय प्रमुख ने सभी कर्मिकों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने राजभाषा हिंदी में सभी कार्यालयीन कार्य करने की अपील की तथा राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधित सभी दिशा-निर्देशों को सजगता से अनुपालन करने का आह्वान किया।

पखवाड़े के शुभारंभ पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें पुस्तकालय की हिंदी की उत्कृष्ट एवं रोचक पुस्तकें, शब्दावलियाँ, टिप्पणियों के नमूने, पत्रिकाएं प्रदर्शित की गईं।

पखवाड़े के दौरान मुख्यालय के निदेशानुसार 04 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें कार्यालय के कर्मिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (दिनांक: 18 सितंबर, 2024)



दिनांक 18 सितंबर, 2024 को अपराह्न में हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतिभागियों को 10 विषय दिए गए, जिनमें से किसी एक विषय पर अधिकतम 800 शब्दों में निबंध लिखना था। इस प्रतियोगिता में हिंदी वर्ग एवं हिंदीतर वर्ग के 12 कर्मिकों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को विषय के कई विविधतापूर्ण विकल्प दिए गए थे, जिसके कारण उन्होंने रुचि पूर्वक सार गर्भित निबंध लेखन प्रस्तुत किया।

हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता (दिनांक: 19 सितंबर, 2024)

पखवाड़े की दूसरी प्रतियोगिता हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता थी। यह प्रतियोगिता प्रश्नपत्र पर आधारित थी। प्रतिभागियों को इसमें कार्यालयीन कामकाज के शब्दों तथा नेमी टिप्पणियों के हिंदी-अंग्रेजी अर्थ, अनुवाद हेतु वाक्यांश, अंकों को शब्दों में लिखने हेतु तथा पत्रों के मसौदे प्रस्तुत करने हेतु विकल्प उपलब्ध कराए गए थे। इस प्रतियोगिता में 19 कार्मिकों ने भाग लिया। कार्मिकों में प्रतियोगिता को लेकर काफी उत्साह था। प्रतिभागियों का प्रदर्शन भी काफी सराहनीय रहा।

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता (दिनांक: 20 सितंबर, 2024)

इस प्रतियोगिता में राजभाषा अधिनियम, नियम, संवैधानिक अनुच्छेद, प्रावधानों, राजभाषा कार्यान्वयन, योजनाओं आदि से संबंधित वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तर के प्रश्न दिए गए। यह प्रतियोगिता काफी रोचक थी। प्रतिभागियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिंदी वाक् प्रतियोगिता (दिनांक: 23 सितंबर, 2024)

दिनांक 23 सितंबर, 2024 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिए गए विषयों पर कर्मचारियों ने खुलकर अपने विचार व्यक्त किए। निर्णायक के रूप में श्री मनोज कुमार यादव (सहायक निदेशक), श्री संतोष कुमार (सहायक निदेशक – राजभाषा प्रभारी) तथा श्री बृजेश कुमार सुमन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी उपस्थित रहें। उन्होंने प्रतिभागियों का मूल्यांकन करने के साथ ही सभी को विषय प्रस्तुति एवं वाक् कला के संबंध में मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता एवं फोटो कैप्शन प्रतियोगिता (दिनांक: 24 सितंबर, 2024)

कार्मिकों की रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को प्रेरित करने के उद्देश्य से दिनांक 24.09.2024 को हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्मिकों को अपनी इच्छा से कोई एक कहानी लिखने का विकल्प दिया गया। कार्मिकों ने इस प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करते हुए कुछ मार्मिक एवं ज्ञान वर्धक कहानी लिखी। इसी दिन फोटो कैप्शन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने अपनी फोटोग्राफी के उत्कृष्ट नमूने बेहतरीन कैप्शन के साथ प्रस्तुत किए।

राजभाषा हिंदी कार्यशाला (दिनांक: 26 सितंबर, 2024)

दिनांक 26 सितंबर, 2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें कुल 13 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में राजभाषा नीति एवं कार्यालय में इसका कार्यान्वयन व ई ऑफिस में हिंदी में कार्य संबंधी विषय तथा क. रा. बी. निगम की राजस्व संबंधी कार्यवाही, हितलाभ, विभिन्न पेशगी एवं



प्रशासनिक मामले से संबंधित विषय रखे गए। कार्मिकों को इस दौरान विभिन्न मामलों में हिंदी में कार्य संबंधी मार्गदर्शन देते हुए अभ्यास कराया गया।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह (दिनांक: 30 सितंबर 2024)

दिनांक 30 सितंबर 2024 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता उप निदेशक (प्रभारी) श्री विशद वि. वाकपांजर ने की। इस दौरान कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर उद्घाटन एवं स्वागत की औपचारिकता पश्चात वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने महानिदेशक महोदय द्वारा प्रेषित अपील पढ़कर सुनाया।



प्रभारी राजभाषा अधिकारी सहित उपस्थित अधिकारियों ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक ने इस अवसर पर दो कविताओं का वाचन किया। समारोह के दौरान पखवाड़े की प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा भी की जानी थी, जिसे लेकर सभी कार्मिकों में जिज्ञासा एवं उत्साह का वातावरण था। अतः प्रतियोगिता के विजेता कार्मिकों की घोषणा की गई एवं उप

निदेशक (प्रभारी) द्वारा सभी पुरस्कृत कार्मिकों को प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में सहायक निदेशक, श्री हेमंत बरडे द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह के समापन की घोषणा की गई।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कार्यालय द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला के दौरान कार्मिकों को संघ की राजभाषा नीति, कार्यालय में उसका कार्यान्वयन, ई-ऑफिस में हिंदी में काम, हिंदी टंकण की विभिन्न सुविधाओं एवं निगम के कार्य क्षेत्र से संबंधित विविध विषयों पर हिंदी में कार्य संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय द्वारा नियमानुसार 04 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।



विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

कार्यालय द्वारा प्रत्येक तिमाही में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का भी नियमित आयोजन किया जाता है। बैठक के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय एवं सभी अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की जाती है। वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में 04 विराकास बैठकों का आयोजन किया गया।

कार्यालय के कार्मिकों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण

कार्यालय के 15 कार्मिकों को हिंदी शिक्षण योजना के नागपुर केंद्र द्वारा चलाए जा रहे पारंगत प्रशिक्षण हेतु जनवरी से मई 2025 सत्र के अंतर्गत नामित किया गया। साथ ही 03 अन्य कार्मिकों को भी जनवरी से मई 2025 सत्र के अंतर्गत प्राज्ञ प्रशिक्षण हेतु नामित किया गया जिनमें से 1 कार्मिक को छोड़ कर शेष कार्मिक उत्तीर्ण घोषित हुए।

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका को निगम मुख्यालय द्वारा "ख" क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार

इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली विभागीय हिंदी पत्रिका "दीप ज्योति" के 10वें अंक, वर्ष 2022-23 को कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय द्वारा "ख" क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं की श्रेणी में **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया। एर्णाकुलम, केरल में दिनांक 16-17 अगस्त 2024 के दौरान आयोजित निगम के 33वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान यह पुरस्कार प्रदान किया गया।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा "श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन" का द्वितीय पुरस्कार



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय की उपस्थिति नियमित रूप से सुनिश्चित की जाती है। दिनांक 08 मई 2024 को आयोजित नराकास की बैठक में इस कार्यालय को वर्ष 2023-2024 हेतु मझौले कार्यालय वर्ग में "श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन" के लिए **द्वितीय पुरस्कार** प्रदान किया गया।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर की अन्य गतिविधियाँ

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

मुख्यालय द्वारा प्राप्त निदेश के अनुपालन में उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में दिनांक 01 मई 2024 से 15 मई 2024 के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 02.05.2024 को उप निदेशक प्रभारी, श्री विशद वि. वाकपांजर द्वारा सभी कार्मिकों को स्वच्छता की शपथ दिला कर किया गया। पखवाड़े के दौरान कार्यालय की सभी शाखाओं के कार्मिकों ने अपने कार्य स्थल की सफाई करते हुए पुराने रिकॉर्ड एवं फाइलों की छंटाई की। कार्मिकों द्वारा कार्यालय परिसर की सफाई का अभियान भी चलाया गया, जिसके अंतर्गत पौधारोपण, गार्डन की साफ सफाई सहित कार्यालय भवन की छत, पानी टंकी एवं वॉटर कूलर आदि की सफाई की गई। स्वच्छता के इस विशेष अभियान में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग शिविर का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 20.06.2024 को स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा कार्यालय परिसर एवं गार्डन की साफ सफाई की गई। दिनांक 21.06.2024 को कार्यालय में योग प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के कार्मिकों ने सहायक निदेशक श्री नीरज कुमार सिंह के नेतृत्व में योग का अभ्यास किया।



स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

एसिक कॉलोनी समिति, नागपुर द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विविध कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात कॉलोनीवासियों के लिए रोचक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। चित्रकला, खेलकूद और रूप-सज्जा की प्रतियोगिताओं में बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया जिसमें स्वलीन पाटील, अभिनव प्रकाश, मोहित कुलमते, अक्ष उमरेडकर, अक्षत गढेवाल, अद्विका इंगळे, हर्षित बुरडे, मिथिलेश कुटे, कांदिबरी कुलमते आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नेशनल सैंपल सर्वे कार्यालय, भारत सरकार में कार्यरत श्री प्रवीण कुमार गोखे, वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी उपस्थित रहे। आजादी के अमृत महोत्सव की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई है वह प्राप्त करने के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपना बलिदान दिया है। उनके बलिदान के कारण ही हम वर्तमान में सुनहरा भारत देख रहे हैं। उनके बलिदान को हमेशा युवा पीढ़ी को अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए। आगे

एसिक कॉलोनी समिति द्वारा किए गए कार्यक्रमों की सराहना करते हुए उनके द्वारा एसिक कॉलोनी के रहवासियों का आभार व्यक्त किया गया।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री मनोज कुमार यादव, सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर द्वारा की गई। आजादी के पर्व की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आजादी का पावन पर्व सभी देशभक्तों को समर्पित है। आजादी हमें बड़े संघर्ष के साथ मिली है, इस कारण आजादी के महत्व को अपनी आने वाली भावी पीढ़ी को बताना चाहिए तथा स्वतंत्रता सैनिकों के गुणों एवं उनके अनमोल वचनों का अंगीकार करना चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार गोखे एवं अध्यक्ष श्री मनोज कुमार यादव, सहायक निदेशक द्वारा एसिक कॉलोनी समिति द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कॉलोनी के विजेता बच्चों को पारितोषिक वितरित किए गए।

कार्यक्रम का संचालन समिति के सचिव श्री नितिन पाटील ने किया। उन्होंने एसिक कॉलोनी समिति द्वारा किए गए सभी हितकारी कार्यों को उल्लेखित करते हुए आजादी के महत्व को रेखांकित किया। समिति के उपाध्यक्ष श्री उमेश बुरडे द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया। इस अवसर पर एसिक कॉलोनी समिति के कोषाध्यक्ष श्री अश्विन उमरेडकर, कार्यकारिणी सदस्य श्री रजत श्रीवास, कार्यकारिणी सदस्य श्री सचिन पवार, कॉलोनी के रहवासी श्री श्रीकांत कुटे, श्री तिरूपती लग्गू, श्री प्रशांत इंगळे, श्रीमती सुमोना गांगुली, श्री प्रविण गढेवाल, श्री धीरेन्द्र कुलमते सहित कॉलोनी के निवासी सदस्यगण एवं उनके परिवारजन उपस्थित रहे।

प्रस्तुति - नितिन चंद्रभान पाटील, सहायक

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर द्वारा 76 वें गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन बड़े धूम-धाम से किया गया। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय प्रमुख श्री विशद वि. वाकपांजर, संयुक्त निदेशक, (प्रभारी) द्वारा एसिक कॉलोनी, नागपुर में ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित कॉलोनी में रहने वाले कार्मिकों के परिवारजन भी उपस्थित रहे।

तत्पश्चात, उप क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहाँ संयुक्त निदेशक (प्रभारी) ने ध्वजारोहण करने के साथ सभी कार्मिकों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। इस दौरान उन्होंने भारतीय गणतंत्र की पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए संविधान के प्रति निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर सहायक निदेशक श्री मनोज कुमार यादव, सहायक निदेशक, श्री संतोष



कुमार, सहायक निदेशक श्री हेमंत बरडे ने भी गणतंत्र के महत्त्व को रेखांकित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में 8 मार्च को पूर्ण अवकाश होने के कारण 7 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन किया गया। आकर्षक गतिविधियों, प्रेरक भाषणों और सांस्कृतिक प्रदर्शनों से युक्त यह कार्यक्रम महिलाओं की उपलब्धियों और योगदान के लिए एक सम्मान का प्रतीक था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विशद वि. वाकपांजर, (उप निदेशक - प्रभारी) द्वारा की गई। इस अवसर पर श्री नीरज कुमार (सहायक निदेशक), श्री मनोज कुमार यादव (सहायक निदेशक), श्री हेमंत बर्डे (सहायक निदेशक) और डॉ. कशिश तरवानी (चिकित्सा निर्देशी) सहित कार्यालय की सभी महिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थीं।



कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती उर्मि चक्रवर्ती थीं। वे केसीएम कॉलेज बैंगलोर में शिक्षण कार्य करने के साथ TEDx वक्ता और 16 वर्षों के अनुभव के साथ जनसंपर्क विशेषज्ञ एवं एक शिक्षाविद् हैं। उन्हें विदर्भ भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

कार्यक्रम के दौरान उप निदेशक (प्रभारी) द्वारा मुख्य अतिथि सहित सभी उपस्थित महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आयोजन की बधाई दी गई। मुख्य अतिथि, श्रीमती उर्मि चक्रवर्ती ने "महिलाओं के साथ - प्रगति में तीव्रता" विषय पर एक प्रभावशाली वक्तव्य दिया। उन्होंने स्व-प्रेम और व्यक्तित्व विकास के महत्व पर जोर देते हुए महिलाओं को अपनी भलाई और आकांक्षाओं को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में अमोलिना बनर्जी, प्र.श्रे.लि. द्वारा एक मनमोहक नृत्य प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया, जिसने उत्सव में एक अनोखा और कलात्मक अभिव्यक्ति का स्पर्श जोड़ा। डॉ. कशिश तरवानी ने एक आकर्षक सत्र आयोजित किया, जहां प्रतिभागियों ने बताया कि जब वे उदास महसूस करते हैं तो वे क्या

करते हैं। इस गतिविधि ने आत्म-चिंतन और भावनात्मक सुदृढ़ता संबंधी चर्चाओं को बढ़ावा दिया। कृतज्ञता और सम्मान के प्रतीक के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं को उपहार वितरित किए गए, जिससे यह उत्सव और भी खास हो गया। कार्यालय में महिला दिवस समारोह का आयोजन महिलाओं की ताकत, लचीलेपन और उनकी उपलब्धियों को समर्पित एक हार्दिक सम्मान था। इस आयोजन ने प्रशंसा, प्रेरणा और खुशी का माहौल बनाते हुए सामाजिक प्रगति के लिए महिलाओं के साथ के महत्व पर सफलतापूर्वक प्रकाश डाला।

प्रस्तुति - अमोलिना बैनर्जी, प्रवर श्रेणी लिपिक

छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले एवं डॉ. भीमराव आंबेडकर संयुक्त जयंती उत्सव

क.रा.बी.निगम अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कर्मचारी एवं अधिकारी वेलफेअर एसोसिएशन, नागपुर की ओर से उप क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर में दिनांक 23.04.2024 को छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले एवं डॉ. भीमराव आंबेडकर की संयुक्त जयंती उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम कार्यालय प्रमुख श्री विशद वि. वाकपांजर उपनिदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीप गायकवाड, अध्यक्ष, समता कर्मचारी फेडरेशन एवं राष्ट्रीय संघटक, समता सैनिक दल तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती डॉ. विशाखा संजय कांबळे, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभाग प्रमुख, मराठी विभाग, वसंतराव नाईक शासकीय कला महाविद्यालय, नागपुर उपस्थित थे। इसके आलावा सहायक निदेशक श्री नीरज कुमार सिंह, श्री मनोज कुमार यादव, श्री हेमंत बरडे सहित एसिक कर्मचारी संघ, नागपुर के अध्यक्ष श्री नितिन चंद्रभान पाटील एवं ई.एस.आई.सी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कर्मचारी एवं अधिकारी वेलफेअर एसोसिएशन, नागपुर के जनरल सेक्रेटरी श्री संदीप सालोडकर एवं उपाध्यक्ष श्री प्रफुल बारापात्रे मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कुमारी प्राजक्ता मून द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के कर्मचारी एवं ई.एस.आई.सी. के बीमाकृत व्यक्ति एवं उनके परिवार के सदस्य काफी संख्या में उपस्थित थे।



कार्यक्रम का प्रारंभ सभी महापुरुषों की प्रतिमाओं को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि द्वारा सभी महापुरुषों की मानवता पर आधारित विचारधारा को उद्घाटित करते हुए उनका वंदन किया गया तथा भारत में घटित श्रमिक आंदोलन पर प्रकाश डाला गया। आगे कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्रीमती डॉ. विशाखा संजय कांबळे ने

सभी महापुरुषों गुणगान करते हुए बताया कि किस प्रकार आज भी उनके विचार प्रासंगिक हैं।

ई.एस.आय.सी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कर्मचारी एवं अधिकारी वेलफेअर एसोसिएशन, नागपुर की ओर से पे “बैक टू सोसायटी” के तहत ई.एस.आई.सी के बीमाकृत व्यक्तियों/ लाभार्थियों के परिवार के 40 बच्चों को पूर्ण स्कूल किट (स्कूल बैग, रजिस्टर, टिफिन बॉक्स, पानी बॉटल, पेन सेट एवं कंपॉक्स बाक्स) का वितरण एवं 32 बीमाकृत व्यक्तियों को छतरी का वितरण कार्यक्रम के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं अन्य मंचासीन व्यक्तियों द्वारा किया गया

कार्यक्रम के दौरान कार्यालय प्रमुख श्री विशद वि. वाकपांजर द्वारा इस कार्यक्रम की प्रशंसा की गई तथा उपस्थित

बीमाकृत व्यक्तियों को आश्वस्त किया गया कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम उनके सुख दुख में उनके साथ है। आगे उन्होंने बताया कि बीमाकृत व्यक्तियों की सहायता के लिए कार्यालय में हेल्प डेस्क स्थापित किया गया है तथा बीमाकृत व्यक्ति कभी भी उनके किसी भी कार्य के लिए कार्यालयीन समय में उनसे या संबंधित अधिकारी से मिल सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कार्यालय द्वारा बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए ज्यादा से ज्यादा हॉस्पिटल को टाई-अप किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए श्री प्रफुल बारापात्रे ने कहा कि ई.एस.आई.सी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कर्मचारी एवं अधिकारी वेलफेअर एसोसिएशन, नागपुर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करने हेतु “बैक टू सोसायटी” कार्यक्रम का हमेशा स्वतःस्फूर्त आयोजन करता है तथा एसोसिएशन द्वारा सामाजिक दायित्व का कारवाँ आगे भी चलता रहेगा। कार्यक्रम के पश्चात एसिक कर्मचारियों एवं सभी बीमित एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था भी एसोसिएशन द्वारा की गई।

प्रस्तुति - संदीप सालोडकर, सहायक

68 वें धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस के अवसर पर सामाजिक पहल

ई.एस.आय.सी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कर्मचारी एवं अधिकारी वेलफेअर एसोसिएशन, नागपुर की ओर से दीक्षा भूमि परिसर में दिनांक 11.10.2024 को 68 वाँ धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस मनाया गया। पिछले 5 वर्षों से एसोसिएशन द्वारा धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री विशद वि. वाकपांजर, संयुक्त निदेशक (प्रभारी), उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के कार्यालय प्रमुख उपस्थित थे। साथ ही विशिष्ट अतिथि डॉ. हर्षवर्धन कांबले, चिकित्सा अधिकारी, सोमवारीपेठ अस्पताल, नागपुर सहित कार्यालय के सभी अधिकारी एवं वेलफेअर एसोसिएशन के पदाधिकारी, सदस्य कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

एसोसिएशन द्वारा “पे बैक टू सोसायटी” के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में सामाजिक दायित्व का निर्वहन करने हेतु दीक्षा भूमि पर जरूरत मंद चीजों के वितरण का कार्यक्रम रखते हुए इस अवसर पर पूरे भारत से दीक्षा भूमि, नागपुर में दर्शन के लिए आने वाले अनुयाइयों को बिस्किट, स्नैक्स तथा पानी बोतल का वितरण किया गया।

एसोसिएशन के इस आयोजन की संयुक्त निदेशक (प्रभारी) द्वारा प्रशंसा की गई तथा डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की उपलब्धियों तथा उनके विचारों का उल्लेख करते हुए उनकी विचारधारा पे अमल करने का आह्वान किया गया। उन्होंने इसके माध्यम से ESIC के हितलाभ तथा सेवाओं की जानकारी लोगों को देने का सुझाव भी दिया। कार्यक्रम में अन्य विशिष्ट अतिथियों एवं अधिकारियों द्वारा भी इस आयोजन की सराहना की गई।

प्रस्तुति - अविनाश एकनाथ गेडाम, प्रवर श्रेणी लिपिक

चित्र यात्रा



13 वीं आंचलिक खेलकूद प्रतियोगिता में उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर की भागीदारी



संयुक्त निदेशक (प्रभारी) को शील्ड सौंपते हुए विजेता प्रतिभागी

चित्र यात्रा



13 वीं आंचलिक खेलकूद प्रतियोगिता में
शील्ड प्राप्त करते हुए
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के विजेता प्रतिभागी



13 वीं आंचलिक खेलकूद प्रतियोगिता
के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय,
नागपुर के लिए गौरव का क्षण



कु. शिवानी सनोडिया, प्रवर श्रेणी लिपिक को
प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए
श्री विशद वि. वाकपांजर, संयुक्त निदेशक (प्रभारी)



श्री लगू तिरुपति, बहु कार्य कर्मचारी को
प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए
श्री विशद वि. वाकपांजर, संयुक्त निदेशक (प्रभारी)



श्रीमती अपूर्वा गिरडकर, सहायक को प्रमाणपत्र
प्रदान करते हुए
श्री नीरज कुमार सिंह, सहायक निदेशक



श्री अश्विन उमरेडकर, प्रवर श्रेणी लिपिक को
प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए
श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक

चित्र यात्रा



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कार्यालय का प्रतिनिधित्व करते संयुक्त निदेशक (प्रभारी)



एर्णाकुलम, केरल में आयोजित क.रा.बी. निगम के अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के प्रतिभागी



स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत सफाई अभियान के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के अधिकारी एवं कर्मचारी गण



संयुक्त जयंती समारोह के दौरान बीमाकृत व्यक्तियों के बच्चों को स्कूल किट का वितरण करते हुए संयुक्त निदेशक (प्रभारी), श्री विशद वि. वाकपांजर



संयुक्त जयंती समारोह के दौरान उपस्थित बीमाकृत व्यक्ति, उनके बच्चे एवं कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी गण

आपकी प्रतिक्रियाएं

आपके कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका 'दीपज्योति' का दसवां अंक प्राप्त हुआ। जिसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका में समाहित विविध विषयक लेख, कहानियां, कविताएं आदि अत्यंत रोचक व उपयोगी हैं। पत्रिका में विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों ने विभिन्न भाषाओं जैसे पंजाबी, गुजराती, मराठी, असमिया, तमिल, सिंधी, कन्नड, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, उर्दू, उडिया में अपने-अपने लेख दिए हैं, जिनका हिन्दी अनुवाद लेखक द्वारा स्वयं या अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा किया गया है, जिससे पत्रिका में विविधता आ गई है। पृष्ठ संख्या 38 पर लिखा गया लेख 'कोरोनाकाल में ईएसआईसी' यह बताता है कि कोरोना महामारी के समय किस प्रकार क.रा.बी. निगम ने बीमितों और उन पर आश्रित परिवारजनों को हितलाभ से लाभान्वित किया। इसके अतिरिक्त पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलक भी चित्रों के माध्यम से दर्शाई गई है, जो कि कर्मिकों की क्रियाशीलता की परिचायक है। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका की यात्रा निरंतर चलती रहेगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए बधाई।

विकास कुण्डल, उप निदेशक (प्रभारी),

उप क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'दीपज्योति' के 10 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में पूर्वोत्तर भारत का इतिहास -मनोज कुमार यादव, आत्मविश्वास - संगीता सुदर्शन, हिंदी के अलावा भी राजभाषाएं- भावना पाटिल, व्यापार की भाषा बनें हिंदी - राहुल राज, क्या आपको हिंदी आती है - रजत श्रीवास, जीना इसी का नाम है - अमित लांजेवार की रचनाएं प्रशंसनीय हैं तथा पंजाबी, गुजराती, असमिया, मराठी तथा तमिल आदि भाषा की रचनाओं को हिंदी में अनुवाद कर पत्रिका को और भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका में विविध प्रकार की रचनाओं का समावेश है जो इसे रुचिकर बनाती है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

अंकिता बनर्जी, उप निदेशक (राजभाषा)

पश्चिम अंचल, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृहपत्रिका दीपज्योति का अंक 10 वर्ष 2022-23 इस कार्यालय को प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। उक्त पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ काफी आकर्षक एवं सुंदर बना हुआ है। आशा है कि भविष्य में भी इस प्रकार की पत्रिका आपके द्वारा प्रकाशित की जायेगी

मुकेश कनोजिया, सहायक प्रबंधक (राभा)

कृते महाप्रबंधक (एटीएम) समन्वय प्रभारी

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, नागपुर

सफ़र में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो



निदा फ़ाज़ली

सफ़र में धूप तो होगी जो चल सको तो चलो
सभी हैं भीड़ में तुम भी निकल सको तो चलो
किसी के वास्ते राहें कहाँ बदलती हैं
तुम अपने आप को खुद ही बदल सको तो चलो
यहाँ किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर तुम सँभल सको तो चलो
कहीं नहीं कोई सूरज धुआँ धुआँ है फ़ज़ा
खुद अपने आप से बाहर निकल सको तो चलो
यही है ज़िंदगी कुछ ख़्वाब चंद उम्मीदें
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

अब आधार नंबर को ईएसआईसी के साथ सीड करें और ढेरों लाभ पाएं जैसे कि

- डिजिटल अपनाएं
- ABHA नंबर का सृजन
 - विभिन्न अस्पतालों के साथ स्वास्थ्य संबंधी रिकॉर्ड साझा करें
 - फाइलों और रिपोर्ट्स को साथ रखने की कोई आवश्यकता नहीं
- सेवाएं व लाभ पाने के लिए पहचान की सरलतापूर्वक पुष्टि

मैं स्वयं और अपने परिवार के लिए आधार को कैसे सीड कर सकता हूँ

नियोक्ता के पास जाएं



ईएसआईसी शाखा कार्यालय जाएं



स्वयं द्वारा आधार सीडिंग



नोट: यदि बाधा मिल जाती है तो नियोक्ता से सहायता के लिए कहें। आप से एक अनुरोध पुराना होना जो अनुपयोग के लिए लाने कायदेनमा के साथ है। एक बार सत्यापन होने पर अनुपयोग हो जाने पर आधार सीड हो जाएगा और ABHA नंबर सृजित हो जाएगा।